द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय
विवेच्य कहानियों का कथ्य : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रास्ताविक :

साहित्य जीवन की व्याख्या है तो कहानी साहित्य की एक सशक्त विधा है । कहानी कथा साहित्य का एक विकसित रुप है । वह मानव जीवन का गद्य है । कहानी वह साहित्य विधा है जो संपूर्ण मानवी जीवन को उसकी पूर्णता में अभिव्यक्ति करने का प्रयास करती है । लेखक मानव की उपलब्धियों को, उसके संघर्षरत जीवन को, उनके उत्थान-पतन को जितना कहानियों के माध्यम से व्यक्त कर सकता है उतना अन्य किसी विधा के माध्यम से नहीं । साथ ही कहानी केवल लेखक के जीवन का आख्यान नहीं है । वह उस समूचे जीवन का परिप्रेक्षण है जिसे वह देखता, समझता और भोगता है । वह उसे कलात्मक रुप से अभिव्यक्त करता है । उसी कलात्मकता से डॉ. पद्माशा जी और सानिया जी ने अपनी कहानियों को लिखा है । उन्होंने समाज के हर पहलू को अपनी कहानियों द्वारा उजागर किया है ।

डॉ. पद्माशा झा लिखित 'छोटे शहर की शकुन्तला' कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं । वे कहानियाँ इस तरह हैं - 1. बर्फ, 2. कहानी और रिपोर्ताज के बीच, 3. चांद पीला क्यों है ?, 4. उन्हें एलर्जी है !, 5. रोज-रोज, 6. पीली कली गुलाब की, 7. उदास गजल सी एक शाम, 8. खानाबदोश रिश्ते, 9. डॉग-फ्लावर, 10. छोटे शहर की शकुन्तला, 11. अनुपमा, 12. गर्म बिस्तर ।

वस्तुत: पद्माशा जी ने विभिन्न विषयों को लेकर अपनी कहानियों का लेखन किया हैं । अत: उनके कहानियों के कथ्य का विवेचन करना यहाँ निश्चय ही औचित्यपूर्ण सिद्ध होगा । लेकिन पद्माशा की कहानियों के शीर्षकों को देखने के उपरांत सानिया जी की 'परिमाण' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों का विवेचन करना भी आवश्यक एवं अनिवार्य लगता है । क्योंकि तुलनात्मक अध्ययन कथ्यगत विवेचन-विश्लेषण के बिना अपूर्ण और असुविधाजनक हो जाता है । अत: यहाँ सानिया की कहानियों के शीर्षक का विवेचन प्रस्तुत है । उनके 'परिनाण' कहानी संग्रह में कुल नौं कहानियाँ संकलित हैं । वे इस प्रकार हैं - 1. परिमाण, 2. स्पर्श, 3. क्षितिज, 4. एक पाऊल पुढे !, 5. काजवे , 6. स्वरुप, 7. चित्र, 8. परिघाबाहेर, 9. आकार ।

विवेच्य कहानीकारों की 'कहानियों का कथ्य' के आधारपर तुलनात्मक अनुशीलन यहाँ प्रस्तुत है ।

2.1 कामकाजी नारी :

प्राचीन काल में नारी का व्यक्तिमत्व विवाह के साथ विकसित होता हुआ परिलक्षित होता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी पुरुष के समान अर्थार्जन करने लगी । इससे पूर्व वह आर्थिक दृष्टि से परावलंबी थी, क्योंकि अर्थोपार्जन का दायित्व पुरुष पर था । अभी भी आर्थिक पराधीनता से नारी पुरुष पर आश्रित है । जो नारियाँ सुशिक्षित हुई, अपने पैरोंपर खड़ी रही उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन हुआ है । नौकरी करनेवाली नारियों में विवाहित, अविवाहित, विधवा और परित्यक्ताएँ भी हैं । कोलंबियाँ विश्वविद्यालय में 'स्त्रीशक्ति' के विषय पर हुए सम्मेलन में विवाहित नारियों के जीवन में काम की चर्चा करते हुए डॉ. प्रमिला कपूर कहती है कि ''अब काम करनेवाली एक मध्यवर्गीय पत्नी आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से बड़ी ताकत बन गई है ।''[1]

पद्माशा की कहानियों में भी नारी की ताकत को कामकाजी नारी द्वारा चित्रित किया है । उनकी 'बर्फ' कहानी की दीपा कॉलेज में प्राध्यपिका है । दीपा ने देवन के साथ चुनौतियों और बाधाओं को सहकर शादी की थी । लेकिन देवन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए उसे और दो साल के बच्चे को छोड़कर चला जाता है । फिर दीपा को बच्चे के कारण एवम् खुद के भविष्य के कारण कॉलेज में नौकरी करनी पड़ती है । दीपा कामकाजी बनना पसंद करती है, ताकि वह किसी के मेहरबानियों का मोहताज नहीं बनना चाहती ।

'चांद पिला क्यों है ?'' कहानी की मोहिनी पढ़ाई में बहुत तेज थी । वह एम्.ए. करती है । जब वह बी.ए. फायनल में थी तभी से ही उसकी शादी की बात चल रही थी । लेकिन सांवली होने के कारण उसकी शादी कहीं भी तय हो नहीं रही थी । फिर उसकी शादी गंगाधर झा नामक आदमी से होती है । वह दिल्ली में नौकरी करता है, और दिखने में सुंदर भी है । एक दिन मोहिनी ने उसे पुछा कि ''अच्छा जी. जे. बताओ, तुम इतने सुन्दर हो-तुमने मुझ जैसी सांवली लड़की में क्या देखा कि शादी के लिए मान गये ?''[2] तो उसने कहा कि वह उसके रुप को नहीं तो उसके

---

1. डॉ. प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी, पृ.-51.
2. डॉ. पद्माशा झा, चांद पीला क्यों है, पृ.-26

एम्.ए. पास होने के कारण उसे पसंद करता है । क्योंकि वह तुरंत नौकरी कर सकती है और अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए गंगाधर झा एक कमाऊ बीवी चाहता था । इसतरह मोहिनी अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए नौकरी करती है ।

'उदास गझल सी एक शाम' कहानी की नायिका रानी विरेश नाम के लड़के से प्यार करती है । लेकिन वह उसे धोखा दे देता है । फिर वह विश्वासघात के कारण पागल की तरह बनती है । लेकिन जब उसे एहसास होता है कि, उसने उसे धोखा दिया है तो फिर वह सँभल जाती है, और आगे पढ़ाई पूरी कर लेक्चरर बनती है । नौकरी के कारण वह अपने पर बीती बात को कुछ हद तक अंदर की घुटन को भूल पाती है । 'खानाबदोश रिश्ते' कहानी की सुजाता शुक्ल एक जानी-मानी पत्रकार थी । "वह तो नगर में पत्रिकाओं में भी छा गई थी और लोगों के दिलों में भी ।"[1] "वह बड़े-बड़े नेताओं के इन्टरव्यु लिया करती थी - यही उसका काम, यही उसका पेशा ।"[2] वह शादी के बारे में इन कामों के कारण सोचती ही नहीं थी । माँ इससे बहुत तंग हो गई थी । लेकिन आगे उसके जिंदगी में भुवन नाम का आदमी आ जाता है । तो उसके मन में एक स्त्री जागृत होती है । जो भुवन को उसके बच्चों सहित अपनाती है । लेकिन आगे भुवन का असली रुप सामने आता है । वह बार-बार उससे अपमानित होती है, और फिर वह पत्रकारिता में वापस आना चाहती है । उसको घर में बैठे रहना गँवारा नहीं होता और ना ही उसे उसके अंदर की पत्रकार बिना कामकाज के घर में बैठने नहीं देती है ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' कहानी की सुस्मिता स्थानीय स्टेट बँक में एक्झिक्युटिव्ह ऑफिसर है । अनेक प्रतियोगिता पास करके वह अपने सभी अधीनस्थ अफसरों के लिए आइडियल एक्झिक्युटिव्ह ऑफिसर बनती है । वह सबसे अलग अपने काम में इतनी घुलमिल जाती है और पुरुषों के बराबर कामकाज करती हुई दिखाई देती है । अपने पति द्वारा उसे तलाक देने के कारण वह कामकाजी नारी बन गई है, ऐसा चित्रित होता है ।

'रोज-रोज' की सुरजी एक मजदूर कामकाजी नारी है । बचपन से लेकर अभीतक सिर्फ कान ही काम करती आयी है । पहले अपने बाप का फिर पति का घर अपनी मजदूरी करके चलाती है । उसके मर्द ने मालिक से तीसरे साल बटाई पर गेहू का खेत लिया था । वह हर साल उसकी

---

1. वही, खानाबदोश रिश्ते, पृ.- 46
2. वही, पृ. -49

कितनी लगन से वह बीज डोभती है, कैरोनी करती है और पोखर में लगाकर करीन से खींचती है .... लेकिन उसकी कोठी तक अनाज कभी पहुंचता ही नहीं । ''कभी-कभी तो सुरजी को लगता है वह मादा कौवा की तरह कोयल के बच्चें को अपना बच्चा समझकर पालती है । अंखफोड होते ही कोयल का बच्चा भाग जाता है और वह सूने घोंसले की तरह ताकती रह जाती है ।''[1] बच्चों का पेटभर खाना खिलाने के कारण सुरजी कामकाजी बन गई है ।

सानिया जी की कहानियों में भी नारी को स्वतंत्र माना गया है । उनकी 'परिमाण' कहानी की देवकी अपने पति के साथ कामकाज करती है और नारी होने के कारण अपने घर को भी अच्छी तरह सँभालती है । अपने पिता समान भैय्या साहब के बुढ़ापे का वह सहारा बनती है । उनको अपने ही घर में रखकर पिता समान सँभालती है । इसके साथ-साथ उसने अपने घर के पास गुलाब का बगीचा बनाया है । गुलाब के फूलों को पॅक करके परदेस भेजती है । ऐसा चित्रण चित्रित है ।

'एक पाऊल पुढे' कहानी की उर्मिला आर्किटेक्ट थी । लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह घर को ही सँभालती है । शादी के पहले जहाँ काम करती थी, उसी मालिक के साथ शादी करती है और फिर भूल जाती है कि, वह एक इंजिनिअर है । जब उसके बेटे की शादी प्राची के साथ होती है, तब वह भी एक आर्किटेक्ट ही है, और बहुत ही कामकाजी है । प्राची को जब पता चलता है कि, उर्मिला भी आर्किटेक्ट ही है, तो वह उसे कहती है की, ''तुम्ही उगीच सोडलंत ममी. आज कुठल्या कुठे असता.... त्या वेळी एवढे शिकून पुढे आलेल्या बाई म्हणून वर चढला असता. मला तर फार हळहळ वाटते. इतकं शिक्षण, एक निर्मिती करु शकणारं मन, बुध्दी...सगळं फुकट गेलं...''[2] (आपने योंही काम करना छोड़ दिया ममी.... आज आप कहाँ होती... उन दिनों में इतनी पढ़ाई करके आगे आनेवाली स्त्री कितनी उपर होती.... मुझे तो बहुत अफसोस हो रहा है । इतनी शिक्षा... एक नई रचना करनेवाला मन.... बुद्धि.... सब मुफ्त गया...) लेकिन जब उसके पति का कारोबार घाटे में आ जाता है तब वह अपने पति को चिंता में नहीं देख पाती । वह खुद अपने पति का व्यवसाय सँभालती है । प्राची द्वारा दिए गए ऑफर का स्वीकार कर कामकाज में लगती है ।

---

1. डा. पद्माशा झा, रोज-रोज, पृ.- 33
2. सानिया, एक पाऊल पुढे, पृ. - 69

'स्वरुप' की रेवती बहुत महत्वाकांक्षी, कामकाजी औरत है । इसी महत्वाकांक्षा को आगे रखकर वह कंपनी की प्रोजेक्ट मॅनेजर बन जाती है । रेवती हमेशा अपने काम और अपनी उंचाई पर चढ़ने की उम्मीद को ही सिर्फ देखती थी । वह अपने कामकाज में इतनी लीन रहती कि, इसके कारण ही उसका गर्भपात हो जाता है । वह माँ बनना भी भूल चुकी थी ।

'चित्र' की शशी एक कंपनी की मालिक है, जो पहले एस्बी नामक आदमी के कंपनी में काम करती थी । शशी होशियारी, चालाखी और लगन से काम करती थी । इन्हीं गुणों को परखकर एस्बीं ने उसे अपनी बहू बनाया था और अपना कारोबार संभालने के लिए एक कर्तबगार व्यक्तिमत्व । लेकिन उसको कंपनी के कारण घर की ओर ध्यान देने के लिए समय ही नहीं मिलता । ऐसे समय उसका पति उसकी बराबरी तो नहीं कर सका लेकिन दूसरी औरत के साथ अलग रहने लगता है और उसके बच्चे भी नाकामयाब निकले । फिर भी वह अपना कारोबार बिना किसी शिकायत के चलाती रही । वह एक चित्रकार भी है । प्रकृति को कला में बांधना उसे बेखुबी आता था । शशी की एक सेहली है - शुभदा । शुभदा एक जर्न्यालिस्ट है । अपने प्रोफेशन के कारण उसने शादी नहीं की थी । वह अकेली ही रहती है और रिर्पोटिंग का काम करती है ।

'परिघाबाहेर' की इरा अपने काम को महत्त्व देनेवाली नारी है । वह अपने आप में एक विश्वास रखती है और उसे साबित करने का मौका हाथ से नहीं जाने देती । ऑफिस में उसे प्रमोशन मिलता है और उसका तबादला होता है । उसने अब तक अफने पति के कारोबार में बहुत मद्द की और हमेशा खुद के करियर को अलग रखा । अब उसके पति अपने कारोबार में स्थिर हो गए और साथ ही बच्चों को भी उसने बड़ा करके, स्वतंत्र और जिम्मेदार भी बनाया ।

'आकार' की रेणु अपने पति के साथ विदेश में नौकरी करती थी । पति के कहने पर वह वापस आती है । तथा दोनों मिलकर छोटा -सा कारोबार शुरु करते हैं । रेणु सबको सँभालने वाली बहुत समझदार औरत थी । वे जब विदेश में थे तब वहाँ उन्हें एक रवि नामक ऐय्याशी दोस्त मिला जो उनके ही शहर से था । इसी कारण वापस आने पर रेणु और अजय उसके घर जाते हैं और आते वक्त उसकी पत्नी सुचेता को घर आने के लिए कहते हैं । बाद में वह सुचेता को अपने ही ऑफिस में सेक्रेटरी पद पर रख देती है । सुचेता बहुत ही भोली थी । घर का कामकाज करती है, बच्चों को पढ़ाती है, और फिर दिनभर ऑफिस में कामकाज करती है । रेणु और सुचेता दोनों साथ-साथ कामकाज जरुर करती है जिसमे एक अपने कारोबार को चलाती है तो दूसरी अपने परिवार को ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्पष्ट हो जाता है कि दोनों की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण परिलाक्षित होता है ।

पद्माशा की कहानियों में नारी हर स्तर कि दिखाई देती है, जो कामकाजी है । अपने घर परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपने परिवार का आर्थिक स्तर बनाए रखनेवाली नारी पद्माशा की कहानियों में दिखाई देती है । सानिया की कहानियों में अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करनेवाली, अपने परिवार की खुशी देखते हुए अपनी आजादी को भी बरकरार रखनेवाली नारी चित्रित है । जो वहुत महत्वाकांक्षी, कुछ नया कर दिखाने का जोश इन नारियों में हैं ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में कामकाजी नारी के अंतर्गत प्राप्त नारियों के चित्रण को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माश और सानिया की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण हुआ है ।
2. पद्माश और सानिया की कहानियों में नारी का चित्रण ज्यादातर लेक्चरर और रिर्पोटर के रुप में पर्याप्त मात्रा में हुआ है ।
3. दोनों की कहानियों में नारी अपना आर्धिक स्तर बनाए रखने के लिए कामकाज करने का चित्रण मिलता है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण समाज के हर वर्ग में से हुआ है ।
- सानिया की कहानियों में कामकाजी नारी सिर्फ उच्च वर्ग और मध्य वर्ग में ही चित्रित हुई है ।
2. पद्माशा की कहानियों में कामकाजी नारी किसी न किसी के दबाव में रहनेवाली चित्रित होती है ।
- सानिया की कहानियों में नारी अपने आप को स्वतंत्र रखनेवाली चित्रित हुई मिलता है ।
3. पद्माशा की कहानियों में चित्रित नारी दूसरों के लिए कामकाज करने वाली चित्रित होती है ।
- सानिया की कहानियों में नारी खुद कि अलग पहचान बनाने के लिए, मर्दों के बराबर कामकाज करनेवाली चित्रित हुई है ।

2.2 हालात से समझौता करनेवाली नारी :

भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी को ही हालात से समझौता करना पड़ता है । पुरुषप्रधान संस्कृति होने के कारण नारी किसी भी हालात से समझौता कर लेती है । सदियों सें ही नारी को घर की मर्यादा माना गया है । हर घर में जो भी बात होती है उसकी जिम्मेदार नारी ही होती है । फिर वह माँ हो, बहन हो या फिर बेटी हो, हालात से नारी को ही समझौता करना पड़ता है । पद्माशा और सानिया जी की कहानियों में हालात से समझौता करनेवाली नारी का चित्रण हुआ दिखाई देता है ।

पद्माशा की कहानियों में से 'बर्फ' की दीपा अपने दिल का दर्द मिटाने के लिए हालात से समझौता करती है । उसका पति देवेन दीपा को और उनका दो साल का बेटा बाबुल दोनों को छोड़कर सभी बंधनों से मुक्ति पाने के लिए दिल्ली चला जाता हैं । वह उसे भुला नहीं सकती और खुद किसी का सहारा लेना पसंद नहीं करती । वह कॉलेज में लेक्चरर थी । उसका दोस्त कुणाल उसकी जिंदगी में आता है, फिर भी वह उससे कटी सी रहती है । अपने बेटे के लिए स्थिति के साथ समझौता करती है और वह अकेली रहना पसंद करती है । 'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' की नायिका, नारी को समाज में रहने के लिए किस तरह से समझौता करना पडता है, यह दर्शाती है । छोटी बच्ची से लेकर जवान होने तक और जवानी से बुढ़ापे तक दुसरों के ही अनुसार चलना पड़ता है । नायिका अपने रुचि अनुसार विषय चयन करना चाहती है, लेकिन वह विषय 'को-एज्युकेशन' वाले कॉलेज में होने के कारण उसे छात्रावास से इजाजत नहीं मिलती है । क्योंकि यह लड़को के कॉलेज में जाना चाहती है ऐसे ताने देकर रुचि का विषय नहीं लेने दिया जाता । और अंत में स्थिति से समझौता करने के बाद भी न किए गए अपराध की वजह बनकर ताने सुनने पड़ते हैं ।

'चांद पीला क्यों है ?' की मोहिनी बचपन से लेकर खुद के मन से कुछ भी नहीं कर पाती । खुद की इच्छानुरुप कभी कहीं जा नहीं सकती । सबके रखवाली में उसका कॉलेज खत्म होता है । लेकिन सांवली होने के कारण उसकी शादी तय होने के लिए दिक्कते आती थी । बाद में उसकी शादी गंगाधर झा से होती है, जो दिखने में बहुत सुंदर है । वह एक बार उसे पुछती है कि, सुंदर होकर भी मुझ जैसी सांवली लड़की से कैसे शादी की ? तो वह कहता है कि, उसने उसे नहीं तो उसकी डिग्री को पसंद किया । जो बाद में घर का आर्थिक स्तर बनाए रखने के लिए फायदेमंद हो सकती है इस तरह मोहिनी खुद को पसंद न करनेवाले पति से जीवन निर्वाह करती है और

खोखले रिश्तों के साथ परिस्थिति से समझौता करती है ।

'रोज-रोज' कहानी की सुरजी बचपन से ही घर को मजदूरी करके संभाल रही है । पिता के घर में भी मजदूरी करती थी और पति के घर भी । लेकिन दोनों जगह मजूरी करके उसे एक वक्त की रोटी उसके नसीब में न थी । मालिक के खेतों को अपना बच्चा समझकर सँभालती है और अनाज मालिक ले जाता है । सुरजी बच्चों को भुखा नहीं देख सकती और खुद भूखी रहकर बच्चों को खिलाती है । हालात से समझौता कर फिर अगले साल मालिक के खेतो को सँभालने के लिए लेती है ।

'पीली कली गुलाब की' की मालिनी का पति विदेश में भारतीय दूतावास में उच्च अधिकारी के पदपर चला जाता है और उसके दोनों बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रावास में रखने के लिए कहता है । दोनों बच्चे चले जाने के बाद मालिनी अकेली रह जाती है । बच्चों के भविष्य के हेतु वह अकेलेपन की त्रसदी से समझौता करती है ।

'खानाब्दोश रिश्ते' की सुजाता एक पत्रकार थी । पत्रकारिता में ही उसकी पहचान भुवन से होती है और वह उसको उसके बच्चों सहित अपनाकर शादी करती है । लेकिन जो भुवन उसका सम्मान करता था वही बाद में उसे अपमानित करता है । वह सात साल तक अपना कैरियर छोड़के उसे सहती रहती है । लेकिन बाद में वह दिल्ली वापस आती है । भुवन उसे फोन करके वापस बुलाता है । फिर वह सोचती है कि, "जीवन का एक हिस्सा तोड़कर दूसरा हिस्सा संवारने में भला क्या औचित्य है । वह अँधेरा भी अपना है यह रोशनी भी उसकी अपनी होगी"[1] इस तरह सुजाता अपने जिंदगी के सच को अपनाकर भुवन के स्वभाव से समझौता करती है ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता माता-पिता के विरोध के बावजूद विनय से प्रेमविवाह करती है । लेकिन बाद में विनय और उसके माता-पिता को विनय की शादी घाटे का सौदा लगती है । दोनों में झगड़े शुरु होते हैं और वे दोनों के अलग होने पर ही बंद होते हैं । धन की लालसा ने विनय को अंधा किया था । वह सुस्मिता से तलाक मांगता है । वह भी न चाहते हुए भी स्थिति से समझौता करके अकेले रहने का फैसला करती है ।

'अनुपमा' की अनुपमा एम्. एस्.सी. फायनल में पढ़ रही थी । स्वभाव से संकोची और मितभाषिणी थी । मेघावी बेटी और पढ़ने में अत्यंत कुशाग्र थी । माँ-बाप की इकलौती बेटी होने

---

1. डा. पद्माशा झा, खानाबदोश रिश्ते, पृ. -58

के बाद भी उसकी माँ उसकी जल्दी से शादी करना चाहती है । अनुपमा को आगे पढ़ाई करनी है, फिर भी माँ के जिद्द के कारण स्थिति से समझौता कर वह शादी के लिए तैयार होती है ।

'गर्म-बिस्तर' की नीमा एक घरेलू नारी है । जो अपना सुख अपना पति और बच्ची में ही देखती है । लेकिन उसका पति हमेशा घर देर से आता है और शराब के नशे में उसे मार-पीट करता है । तभी भी नीमा अपने पति की इन हरकतों से बच्ची को देखकर नजरअंदाज करती है और स्थिति से सम्झौता करती है ।

सानिया की 'परिमाण' की देवकी कैलास नाम के लड़के से प्यार करती थी । लेकिन वह फिल्मों में काम करने के लिए घर से भाग जाता है और देवकी की शादी सुखदेव से होती है । तभी भी देवकी कैलास से मिलती रहती है । बाद में जब उसकी बेटी रितू बड़ी होती है तभी रितू को इस बात का शक होता है कि, वह शायद कैलास की बेटो है । वह कैलास से एक बार कहती है कि, ''ममा मला पुष्कळ बोलली आहे या सगळ्या विषयांवर, जुने दिवस, तुमची पत्रं, आठवणी.... एखादी मैत्रीण काय बोलते अशा तऱ्हेनं.... अंकल, तुम्ही मला काही फसवू नका. ममानं पहिल्यापासून तुमच्यावर अखंड, सतत प्रेमच केलं. अगदी कांदबरीत शोभावं असं आणि तितक्या उत्कटपणे, तुम्ही त्याची कदर केली न केली तरीही ?....''[1] (ममा ने मुझे बहुत कुछ बताया है आपके इस विषय पर, पुराने दिन, आपके खत, यादें, एखाद सहेली जिस तरह बात करेगी उसी तरह ..अंकल... आप मुझे फँसाना मत..... ममाने आप पर पहले से ही अखंड हमेशा प्यार ही किया.. उपन्यासों में चित्रित होता है वैसे ही और उसी उत्कटता से, आप उसकी कद्र करे या न करे तभी भी ।) इस तरह देवकी की बेटी रितू ने अपने माँ के प्यार को समझकर परिस्थिति से समझौता किया है ।

'स्पर्श' की सुचित्रा एक घरेलु औरत है । उसने अपनेआप को पति और बच्चों में इसतरह ढाल लिया है कि, उसे खुदपर ध्यान देने को वक्त नहीं मिलता है । वह दिन वही सब करती है जो उसके पति और बच्चों के सुविधानुसार हो । एक बार उसके पति लिव्हर के दर्द के कारण बीमार थे और उन्हें हॉस्पिटल में ॲडमिट किया था । वहाँ विक्रांत नाम के उसके बेटे के ही उम्र के डॉक्टर थे, जिसके स्वभाव से सुचित्रा प्रभावित हो जाती है । वह एक दिन सहजता से उसे कहता है कि, ''आज काही निराळ्याच दिसता आहात मिसेस दिवाण ? काय बरं... हां. हां...हा रंग, मोरपंखी,

---

1. सानिया, परिमाण, पृ. -16

शोभून दिसतो आहे तुम्हाला''[1] (आज कुछ और ही दिखती है आप मिसेस दिवाण ? क्या कहते है..... हां....हां. कौनसा रंग.... मोरपंखी.... बहुत ही जचता है आप पर) तभी उसका ध्यान खुद पर जाता है । वह सोचती ही रहती है कि, कभी यह बात उसने सोची ही नहीं थी । उसने अपने मन की आवाज दबोच के रखी थी । कितनी औरतें ऐसी है, जो अपने परिवार के लिए खुद के मन से समझौता करती है ।

'क्षितिज' की यशोधरा पढ़ने के लिए विदेश जाती है और वहाँ ही एक अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करती है । माता-पिता का इस शादी को विरोध होते हुए भी वह शादी करती है । फिर आठ साल बाद अपने पति को लेके माता-पिता एवं परिवारवालों से मिलने आती है । पिता का गुस्सा उसे याद आता है, उनका कहना था कि, वह जहाँ है वही रहें । अपने पिताजी कभी किसी गैर जाती के लड़के के साथ हुई शादी को स्वीकार नहीं करेंगे । इस कारण वह अपने माता-पिता से बिना मिले स्थिति से समझौता कर वापस चली जाती है ।

'एक पाऊल पुढे' की उर्मिला आर्किटेक्ट थी । वह विश्वास के फर्म में नौकरी करती थी और फिर बाद में विश्वास उसे शादी के लिए पूछता है । दोनों की शादी होती है । उसे लगता है कि, दोनों मिलकर फर्म को एक ऊँचाई तक पहुँचाएंगें । लेकिन ऐसा नहीं होता है । पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उर्मिला को घर में रहना पडता है और फर्म की तरक्की करने की उसकी इच्छा, इच्छा रह जाती है । परिवार के सामने खुद के कैरियर को महत्त्व न देकर खुद की इच्छा और महत्त्वकांक्षाओं से समझौता करती है, ऐसा चित्रित है ।

'काजवे' की अनू बहुत दिनों बाद अपने मायके आती है । आते ही उसके बचपन के दोस्त राघव के घर जाती है । राघव एक विक्षिप्त स्वभाव का, अकेला, खुद के विचारों और तत्त्वों में रहनेवाला आदमी था । जिस पर परिवार की जिम्मेदारी कम उम्र में ही आ गई थी । भाई-बहनों की पढ़ाई और उनकी घर-गृहस्थी बनवाने में ही उसकी आधी उम्र गुजर गई थी । बाद में माँ की जिद्द के कारण उसे लीला से शादी करनी पड़ती है । लीला के माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उसके मर्जी के खिलाफ शादी होती है । फिर भी लीला राघव की उम्र को नजरअंदाज करती है । लेकिन राघव लीला से ना बात करता है, ना उसके प्रति प्यार जताता है, ना कोई शिकवा, ना झगड़ा कुछ भी नहीं । यह बात वह अनू से कहती है, तो अनू लीला को सलाह

1. सानिया, स्पर्श, पृ. - 32

देती है । कहती है कि, जब बच्चा पैदा हो जाएगा तो इन बातोंसे तुम्हें शिकवा नहीं होगा । इसपर लीला कहती है, "पण त्याआधी काही व्हायला तर हवं ना ! त्यांना माझ्याबद्दल काही वाटलं तर निदान जवळ तरी येतील. मगच काही घडेल की नाही ?"[1] (लेकिन इसके लिए कुछ होना जरुरी है ना ! उनको मेरे बारे में कुछ लगा तो वह मेरे पास तो आयेंगे । तभी कुछ होगा की नहीं ?") इस तरह लीला अपने पति के मानसिक अवस्था से समझौता कर जीवन निर्वाह करती है ।

'चित्र' की शशी एक बौद्धिक, होशियार और चालाक औरत थी और इसी प्रवृत्ती को देखकर एस्बीं नामक आदमी ने उसे अपने असिस्टंट से बहू बनाया था । उसकी परिश्रम करने की प्रवृत्ति को देखकर एस्बीने उसपर अपने कारोबार का दायित्व सौंपा था । वह उसे बेखुबी निभा भी रही थी । लेकिन वह इस स्थिति पर पहुँची थी कि, उसके पास घर की तरफ ध्यान देने के लिए वक्त ही नहीं था । इससे बच्चें बेफिक्र बनते चले हैं और पति अलग कारोबार चलाता है लेकिन असफल होता है । शशी की ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाता इससे वह बहुत जलता है और फिर एक औरत को लेके अलग रहकर शशी के अंदर की औरत को नीचा दिखाता है । शशी इस स्थिति से समझौता करती है, और अपना कारोबार बिना डगमगाते चलाती है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा और सानिया की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी का चित्रण परिलक्षित होता है ।

उनकी कहानियों में जीवन से समझौता करनेवाली नारियाँ दिखाई देती है । याने भारतीय समाज की टिपीकल नारी अलग-अलग परिस्थिति में परिलक्षित होती है ।

पद्माशा की कहानियों में नारी परंपरा को धर्म समझकर समझौता करनेवाली दिखाई देती है । सानिया की कहानियों में विषम परिस्थिति से समझौता करनेवाली नारी दिखाई देती है ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में समझौता करनेवाली नारी को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित हुए हैं, वे इस प्रकार हैं -

---

1. सानिया, काजवे, पृ. - 12

साम्य :

1. पद्माशा और सानिया, दोनों की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी का चित्रण परिलक्षित होता है ।
2. दोनों की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी जिंदगी में आनेवाली हर स्थिति से समझौता करते हुए चित्रित होती है ।
3. दोनों की कहानियों में अपना परिवार बचाए रखने के लिए समझौता करनेवाली नारी का चित्रण है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी परिवार को बचाने के लिए अपनी जिंदगी से समझौता करती है ।
- सानिया की कहानियों में वह दिल से समझौता करती है ।
2. पद्माशा की कहानियों में समझौता करने वाली नारी अपने विचारों को न्याय नहीं देती है ।
- सानिया की कहानियों में नारी समझौता करते समय अपने विचारों को न्याय देते हुए परिलक्षित होती है ।
3. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी, नारी का धर्म परिस्थिति से समझौता करना ही है, ऐसे मानकर चलनेवाली है ।
- सानिया की कहानियों में नारी परिस्थिति का हल निकालकर उससे वह समझौता करती है ।

2.3 घुटन में जीनेवाली नारी :

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है, लेकिन समाज में उसकी दशा मात्र दयनीय है । पुरुष वर्ग अक्सर उसकी शक्ति को क्षीण करता है । परिणाम स्वरुप हार या घुटन उसकी नियती बन जाती है । नि:संदेह आज भी वह पुरुषी दंभ एवम् मानसिकता का शिकार हो रही है । एक ओर नारी स्वातंत्र्य का दौर है, तो दूसरी ओर उस पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार और मानसिक उत्पीड़न के कारण उसकी बढ़ती घुटन नारी अस्तित्व को ही मिटा रही है और यही घुटन पद्माशा और सानिया की कहानियों द्वारा चित्रित हुई दिखाई देती है ।

पद्‌माशा के बर्फ की दीपा का पति देवन शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने हेतु दो साल के बच्चे और दीपा को छोड़कर चला जाता है । घरवालों के मर्जी के खिलाफ दीपा ने देवन के साथ शादी कि थी । आज देवन के इस बर्ताव से वह अपने आप में घुटन महसूस करती हुई चित्रित हुई दिखाई देती है ।

'कहानी और रिपोर्ताज के बीच' की छोटो बच्ची लिली को होस्टल की ऑफीस से पन्द्रह रुपये चुराने के जुर्म पर बिना किए गए अपराध की सजा मिलती है । वह तो होस्टल की सुपीरियर की धमकियों के कारण स्वीकार करती है कि, उसने ही रुपयों की चोरी की है । इसका गहरा असर लिली पर पड़ता है और छोटी सी उम्र में ही यह बच्ची जिंदगी से घुटन महसूस करने लगती है ।

'चांद पीला क्यों है ? ' की मोहिनी के पति के अनैतिक संबंध किसी शालिनी नाम की सुंदर औरत के साथ थे । इससे उसको बहुत तकलीफ होती है । कोई भी औरत अपने पति का दुसरी औरत के साथ संबंध पसंद नहीं कर सकती है । ऐसे स्थिति में मोहिनी घुटन में जीती हुई दिखाई देती है ।

'रोज-रोज' की सुरजी मजदूरी करके परिवार को संभालने वाली नारी है । वह मालिक के खेतों को अपना बच्चा समझकर संभालती थी । लेकिन उसके घर की कोठी तक अनाज कभी नहीं पहुंचता था । "कभी कभी सुरजी को लगता है वह मादा कौवा की तरह कोयल के बच्चे को अपना बच्चा समझकर पालती है । अंखफोड़ होते ही कोयल का बच्चा भाग जाता है और वह सूने घोंसले की तरह ताकती रह जाती है ।"[1] इस तरह बच्चों की भूख के कारण वह घुटन की रोजमर्रा जिंदगी जी रही दिखाई देती है ।

'पिली कली गुलाब की' की मालिनी का पति विदेश में नौकरी करने के लिए गया है और दोनों बच्चे होस्टल में पढ़ाई के लिए रहते हैं । मालिनी घर में अकेली रहती है और इसी कारण ही खुद में ही एक उलझन बनकर रह जाती है । अकेलेपन से त्रस्त मालिनी घुटन की शिकार होती दर्शीत होती है ।

'उदास गझल की एक शाम' की रानी विरेश से बहुत प्यार करती है । दोनों भागकर शादी करना चाहते हैं, लेकिन ऐन वक्त पर विरेश धोका देता है । यह सदमा और घरवालों और समाज दूवारा दी गई प्रताड़ना को वह सह नहीं सकी और इसी विरह में वह जिंदगी भर घुटती रही । विरह

---

1. डॉ. पद्‌माशा झा, रोज-रोज, पृ. - 33

और विश्वासघात के कारण रानी घुटन में जीती हुई चित्रित हुई है ।

'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता एक प्रभावी और निर्भिड पत्रकार थी । लेकिन भुवन के प्यार में वह नौकरी छोड़कर उसको ही अपना कैरियर मानकर वह उसको उसके बच्चों सहित अपना लेती है । मगर जानीमानी पत्रकार होकर भी भुवन के स्वभाव में दोहरापन था उसे वह पहचान ना सकी । बादमें उसे पछतावा हुआ तो वह अपने कैरियर के लिए घुटती रही । असल जिंदगी और कड़वा सच इस दोहरी भूमिका को निभाते-निभाते घुटन में जीनेवाली नारी के रुप में सुजाता चित्रित हुई है ।

'अनुपमा' की अनुपमा शादी के बाद जब अपने ससुराल जाती है, तब उसे लगता है कि वह एक अच्छी पत्नी, अच्छी बहू, अच्छी भाभी बनकर सबसे प्यार से व्यवहार करेगी और वह स्वभाव से थी भी बहुत भोली और प्यारी है । लेकिन ननंद, साँस-ससुर के लालच ने उसे बहुत दु:ख देना शुरु किया । वह कामकाज तो सब करती थी, लेकिन पति के दूर रहने के कारण उसके प्यार से वंचित रही थी । उसको उसके पति से मिलने का मौका ही उसकी सास नहीं देती थी । इसी तरह अनुपमा एक ओर पति का प्यार न मिलने के कारण तो दूसरी ओर ससुराल से मिलने वाली यातनाएँ आदि के कारण वह घुटन में जीती हुई दिखाई देती हैं ।

'गर्म बिस्तर' की नीमा अपने पति के मारपीट से तंग आकर और दुसरी औरत को रखने के कारण पति से झगड़ा करती है । लेकिन वही उसे घर से निकालता है । वह एक पंडित के घर में पनाह पाती है । वहाँ वह प्यार, अपनापन, घर, और उसे प्यार करनेवाला आदमी पंडित के रुप में उसे मिलता है । फिर भी वह घुटन में जीती दिखाई देती है । उसके पति और उसके झगड़े के दौरान उसकी बच्ची वही रह जाती है और इसी कारण नीमा ममतामयी वात्सल्य से घुटन में जीती हुई चित्रित हुई दिखाई देती है ।

सानिया की कहानियों में भी घुटन में जीनेवाली नारी का चित्रण है । उनकी 'परिमाण' की देवकी जिंदगीभर समझौते के साथ जीती है । वह बचपन से ही अपने पापा के दोस्त के यहाँ हमेशा आती रहती है और फिर उन्हीं के बेटे कैलास से प्यार करने लगती है । लेकिन कैलास फिल्मों में काम करने के लिए घर से भाग जाता है । फिर देवकी की शादी सुखदेव से होती है । वह अपने पति से प्यार तो करती है, हर सुख:दुख में साथ भी देती है, लेकिन जो अपनापन प्यार कैलास के लिए उसके दिल में है, वह उसके पति को नहीं दे पाती । यही कारण उसको घुटन में जीने के लिए मजबूर करता है ।

'स्पर्श' कहानी की सुचित्रा अपने पति और बच्चों का दिलोजान से खयाल रखती है, लेकिन यही काम सुचित्रा की नियति है ऐसा उसे एहसास दिलाया जाता है । इससे वह घुटन की जिंदगी जीती हुई चित्रित हुई है ।

'क्षितिज' की यशोधरा अपने माता-पिता के स्वीकृति बिना एक परदेसी अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करके उसके पास रहती है । इससे माता-पिता क्रोधित होते हैं । बहुत सालों बाद उनको मिलने वह वापस आती है, लेकिन उसे वह प्यार, अपनापन नहीं मिलता जो उनके बेटी के लिए मिलता था । इससे वह बहुत दु:खी होती है और माता-पिता के प्यार के लिए घुटन में जीती हुई वापस अमरिका चली जाती है ।

'एक पाऊल पुढे' की उर्मिला एक आर्किटेक्ट थी । वह विश्वास के फर्म में काम करने लगी और उसी की बीबी बन गई । आगे उसे कैरियर को छोड़कर घर संभालना पड़ा और इसी कारण वह घुटन में जीती हुई चित्रित हुई है ।

'काजवे' की लीला का ब्याह उससे कहीं ज्यादा उम्र वाले राघव के साथ होता है । उसके माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसका जल्दी विवाह होता है । लेकिन राघव उससे बात तक नहीं करता है, ना झगड़ा ना कुछ । इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए बच्चा चाहती है, लेकिन राघव उसके पास नहीं आता । पति का प्यार और बच्चे की तमन्ना इसके कारण लीला घुटन में जीनेवाली नारी के रुप में चित्रित है ।

'स्वरुप' की रेवती एक महत्त्वकांक्षी और बहुत ही मेधावी चालाक ऑफीसर थी । वह सिर्फ अपने काम से मतलब रखती थी । उसे पति भी वैसे ही मिलता है जो उसकी हर इच्छा को सहायता करता है । लेकिन कितने भी उच्चपदों को हासिल क्यों न किया जाए एक औरत माँ न बने तो वह अधुरी होती है । समाज में उसका कोई स्थान नहीं रहता है अगर वह माँ बनना न चाहे तो । रेवती भी माँ बनना नहीं चाहती थी, लेकिन एक सेक्रेटरी उसे कहती है कि, "माहित आहे मला, तुम्ही फार महत्त्वकांक्षी आहात. एखाद्या पुरुषापेक्षाही म्हणून तर.... सगळे तुमचा फायदा करुन घेतात, बॉस पण..... शिवाय काही झालं तरी तुम्ही एक बाईच आहात की, खाजगीत विचारते, रागावू नका...... तुम्ही मुलाबाळांचा कधी विचार करणार आहात की नाही ? केवळ काम काम करत एखाद्या नैसर्गिक आनंदाला मुकणं काही खरं नाही."[1] (" पता है मुझे .... आप बहुत

1. सानिया, स्वरुप, पृ. - 99

महत्त्वकांक्षी है.. किसी पुरुष की अपेक्षा भी... इसीलिए तो....सभी आपका फायदा उठाते हैं.... बॉस भी.... फिर भी कुछ भी हुआ तो भी आप एक औरत ही है.... निजी तौरपर पुँछती हुँ गुस्सा मत हुईए.....कभी आप बच्चों के बारे में विचार करने वाली है या नहीं ? या सिर्फ काम ही काम करते हुए किसी प्राकृतिक आनंद से वंचित रहन अच्छा नहीं है ।'') तब वह गर्भवती रहने का निर्णय लेती है । जब गर्भवती होने पर भी पहले जैसा ही काम करती है तो उसका गर्भपात हो जाता है । माँ न बनने के कारण रेवती घुटन में जीती हुई दिखाई देती है ।

'चित्र' की शशी एक बहुत करारी, महत्वाकांक्षी नारी है । वह अपने कारोबार में इतनी मशगुल हो गई कि उसे न बच्चों का खयाल रहा न पति का, और न घर का । बादमें पति ने दूसरी औरत को रखकर दूसरा घर बनाया और बच्चे कही अपनी ही धुन में रहने लगे । फिर इस बात का एहसास हुई शशी अकेलेपन के कारण घुटन में जोती हुई चित्रित है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा और सानिया की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में घुटन में जीने वाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य है । उनकी कहानियों में जीवन से समझौता करते-करते अपने आपको कभी न्याय न दिलाने से घुटन में जीने वाली कई नारियाँ चित्रित होती है । पद्माशा झा के कहानियों की नारियाँ पति को परमेश्वर मानकर उसकी हर गलती नजर अंदाज कर देती है और परिवार के लिए अपना पूरा सहयोग देती है । चाहे उसके मन को तकलीफ, घुटन क्यों न मिले और उन्हें एहसास भी नहीं होता कि, वो क्यों और किसके लिए घुटन में जी रही है । सानिया की कहानियों की नारियाँ अपने पैरोंपर खड़े रहने की काबिलियत रखती हैं । फिर भी परिवार को लक्ष्य मानती है और उन्हीं के लिए अंदर ही अंदर घुटती चित्रित दिखाई देती है ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में घुटन में जीनेवाली नारी को लेकर जो साम्य-वैष्मय परिलक्षित हुए हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. दोनों की कहानियों में घुटन में जीनेवाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।

2. दोनों की कहानियों में ज्यादातर नारी पात्र अपने पति और बच्चों के कारण ही घुटन में जीते परिलक्षित होते हैं ।

3. दोनों की कहानियों में नारियाँ अकेलेपन के कारण घुटन में जीती दिखाई देती है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने पति को परमेश्वर मानती है, और उसकी हर गलती नजरअंदाज करके खुद ही घुटन में जीती दिखाई देती है ।

   - सानिया की कहानियों की नारियाँ सही को सही और गलत को गलत माननेवाली चित्रित होती है ।

2. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपना कैरियर बनाने के लिए सहयोग ना मिलने के कारण घुटन में जीनेवाली दिखाई देती हैं ।

   - सानिया की कहानियों के नारी पात्र अपने कैरियर में उच्च पदस्थ होकर भी परिवार में अपनापन न मिलने के कारण घुटन में जीनेवाली नारी दिखाई देती है ।

2.4 वैवाहिक अस्थिरता :

वैवाहिक अस्थिरता वर्तमान युग में चिंता की महत्त्वपूर्ण बात बन गई हैं । नारी जागरण, वैज्ञानिक चिंतन, मूल्यों में परिवर्तन तथा विघटन और धार्मिक रुढ़ियों के प्रतिदिन क्षीणतर होने के कारण पति-पत्नी संबंधों में अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न होकर विवाह विच्छेद तक संबंध बिघड जाते हैं । विवाह एक अविच्छेद, अंतिम और अटूट बंधन है, उसे किसी भी स्थिति में निभाना चाहिए, अब इस धारणा में काफी बदलाव आ रहा है । पाश्चात्य प्रभाव एवं समाज सुधारकों के आंदोलनों से शिक्षित और सजग बनी नारी का अब अबला, सतीत्व, पतिव्रत्य जैसी धारणाओं से विश्वास उठ रहा है । आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने के कारण नारी अधिकाधिक व्यक्ति के रुप में प्रतिष्ठित होने लगी है और पति को चुनौती भी देने लगी है । अब वह प्राप्त स्थिति को चुपचाप स्वीकार एवं सहन कर संबंधों को बनाए रखने के लिए भी मजबूर नहीं है । संबंध विच्छेद तथा वैवाहिक अस्थिरता के बारे में डॉ. पुष्पपाल सिंह के अनुसार, ''दांपत्य संबंधों में तुर्शियों, अलगाव और रिक्तता की चरम परिणति दांपत्य संबंधों के बिलकुल टूट जाने में ही होती है । पति-पत्नी संबंधों का यह अलगाव कभी-कभी कानूनी रुप ले लेता है तो कभी बिना किसी कानूनी कार्यवाही

और औपचारिकता के भी दोनों पूर्णत: संबंध-विच्छेद कर लेते हैं ।''[1]

पति-पत्नी के बीच तीसरे की उपस्थिति के कारण वैवाहिक अस्थिरता बन जाती हैं। आज तक पति द्वारा अवमानित, लांछित, प्रताड़ित होकर भी स्त्री ने घर की दिवारें लाँघ नहीं दी थी, पर आज वह घुट-घुटकर जीने की अपेक्षा भी नहीं रखती है । मत भिन्नता, रुचियों में भिन्नता, काम असंतुष्टि, प्रेमभाव, वैवाहिक संबंधों में उदासीनता, असामंजस्य आदि कई कारण वैवाहिक अस्थिरता उत्पन्न कर देते हैं । पति-पत्नी के संबंधों में भावनाओं की अनुभूतियों की प्रगाढ़ता जब तक नहीं होगी, वह एक दूसरे से बंधे तो रहेंगे परंतु हृदय की भटकन समाप्त न होगी । इसी का रांगेय राघव इस प्रकार से उल्लेख करते हैं - ''पति-पत्नी का सम्बन्ध अपने शारीरिक सम्बन्ध के कारण इतना प्रिय नहीं होता, एक दुसरे पर बलिहार जानेवाली भावना की शक्ति के कारण वह कितना पवित्र और महान हो जाता है, उसमें सब दु:ख झेल जाने की अदभ्य क्षमता होती है ।''[2]

पद्‍माशा ने अपनी कहानियों द्वारा वैवाहिक अस्थिरता को चित्रित किया है । उनकी 'बर्फ' की दीपा और देवेन दोनों अपने मन से कितनी चुनौतियों और बाधाओं को सहकर शादी तो कर लेते हैं, लेकिन जो जोश शादी करते वक्त था वह निभाते वक्त देवेन थक जाता है । अपने स्वतंत्र जिंदगी में देवेन को दीपा बाधा नजर आती है और वह अपनी मुक्ति के हेतु दीपा और छोटा बच्चा बाबुल को छोड़कर दिल्ली चला जाता है । जब दीपा उसे पुछती है कि ऐसा क्यो...? तो वह जवाब देता है कि, ''मैरेज-लाईफ मुझे 'सूट' नहीं करती । आइवांट टु बी फ्री फ्रोम ऑल बरडंस'' (मैं सभी बंधनों से मुक्ति चाहता हूँ ।)[3] इस तरह प्रस्तुत कहानी में अपने मुक्ति के लिए विवाह जैसे बंधन को ठुकराकर कर्तव्य से भागने की प्रवृत्ति के कारण यहाँ वैवाहिक अस्थिरता बन जाने का चित्रण दिखाई देता है ।

'चांद पीला क्यों हैं ?' की मोहिनी के साथ गंगाधर झा नामक आदमी अपने स्वार्थ के लिए सांवली होनेपर भी शादी कर देता है । मोहिनी का रिश्ता बहुत दिनों तक सांवली होने के कारण पढ़ी लिखी होने के बावजूद भी तय नहीं हो रहा था । जी. जे. उसके साथ महज इसलिए शादी करता है कि, वह अपना आर्थिक स्तर बनाने के लिए एक कमाऊ बीवी चाहता था और दूसरी ओर उसका शालिनी नाम के सुंदर औरत के साथ अनैतिक संबंध था । इसकारण दोनों के वैवाहिक जीवन में

1. डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ, पृ.- 162
2. रांगेय राघव, कब तक पुकारु, पृ. - 181
3. डॉ. पद्‍माशा झा, बर्फ, पृ. - 13

कलह और साशंकता निर्माण होकर अस्थिरता मची हुई चित्रित होती है ।

'उदास गजल सी एक शाम' की रानी वीरेश नाम के लड़के के साथ प्यार करती थी और उससे शादी भी करना चाहती थी । लेकिन ऐन वक्त पर वीरेश भाग निकला और यह सदमा रानी सह न सकी । आगे उसने शादी की लेकिन वहाँ वो रह ना पाई । फिर तलाक लेके दूसरी शादी की फिर भी वह वीरेश को भूल ना सकी और वह शादी भी टूट गई । इसी तरह विरह और वीरेश द्वारा विश्वास को तोड़ने के कारण वह विवाह जैसे बंधन को संभाल न सकी और इसी कारण उसके वैवाहिक जिंदगी में अस्थिरता आ गई ।

'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता एक पत्रकार है । वह शादी नहीं करना चाहती थी फिर भी जब भुवन उसके जिंदगी में आ गया तब वह उसी के प्यार में खो गई और भुवन को उसके बच्चों सहित अपनाकर उससे शादी करती है । लेकिन जब शादी के नये दिन खत्म हुए तब भुवन के असली स्वभाव का उसे पता चलने लगा । जो उसके कैरियर को बढ़ावा देता था, उसीने उसका बाहर आना जाना भी बंद करवाया । रात को देर से आना, शराब पीना यह सुजाता को पसंद नहीं था और इसी कारण दोनों के वैवाहिक जीवन में अस्थिरता थी । विचारों में अंतर होने के कारण इस विवाह से दोनों भी सुखी नहीं है ऐसा चित्रित होता है ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता ने अपने सहपाठी विनय से घरवालों की मर्जी के खिलाफ शादी की है । लेकिन जब वैवाहिक जीवन शुरु हुआ तब विनय के माता-पिता एवं विनय का भी लालच बढ़ने लगा । सुस्मिता कमाती थी फिर भी यह शादी विनय के लिए घाटे का सौदा बन गई । इससे दोनों में कलह बढ़ता गया और विनय ने सुस्मिता को तलाक का नोटिस भिजवा दिया । इस तरह धन की लालसा के कारण वैवाहिक अस्थिरता पैदा हो जाती है ।

'अनुपमा' की अनुपमा अपने माता-पिता की इकलौती बेटी है । उसकी शादी बड़ी धूमधाम से इंजनियर संजय के साथ होती है । लेकिन उसकी बड़ी ननद ने सास-ससुर को अनुपमा के विरुद्ध धन की लालसा के कारण भड़काया और इसीकारण संजय और अनुपमा के वैवाहिक जीवन में अस्थिरता मच जाती है ।

'गर्म बिस्तर' की नीमा अपने पति के द्वारा किए गए अन्याय-अत्याचार से पीड़ित है । फिर भी वह अपनी बच्ची को देखकर सह लेती है । लेकिन उसका पति दूसरी औरत को लेके आता है , तब नीमा उसे रोकती है तो वह उसे ही मारता-पीटता है । तब नीमा घर छोड़कर चली जाती

है । औरत कुछ भी सह सकती है, लेकिन अपने पति क़े बाहों में दुसरी औरत कभी नहीं सह सकती । जिससे उनके जीवन में वैवाहिक अस्थिरता आ जाती है ।

सानिया ने भी अपनी कहानियों में समाज में चल रहे वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण किया है । उनकी 'परिमाण' की देवकी की शादी सुखदेव से होती है । लेकिन देवकी बचपन से ही उसके पिताजी के दोस्त भैयासाहेब के बेटे कैलास को चाहती थी । लेकिन कैलास सिनेमा में काम करने के जिद से भाग जाता है और देवकी की शादी इसी बीच हो जाती है । आगे वह दोनों मिलते हैं । देवकी अपने पति से प्यार तो करती है लेकिन उसका मन भटकता है । कैलास के साथ संबंध होने के कारण सुखदेव और देवकी के परिवार में कलह मचता है और उनका वैवाहिक जीवन अस्थिरता से भर जाता है ।

'क्षितिज' की यशोधरा पढ़ने के लिए परदेस जाती है । वहाँ ही एक अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के के साथ शादी करती है । अंतरजातीय विवाह को स्वीकार करने की मानसिकता अभी भी भारतीय परंपरा में नहीं है । इसीकारण उसके माता-पिता इसे स्वीकार नहीं करते । लेकिन उन दोनों के जीवन में समाज में उठते सवालों के कारण वैवाहिक अस्थिरता मच जाती है ।

'एक पाऊल पुढे' की उर्मिला एक आर्किटेक्ट है । लेकिन उसकी शादी के बाद वह एकदम घरेलू औरत बन जाती है । उसका पति विश्वास एक फर्म चलाता था । बाद में इस कारोबार में घाटा होने लगा । इस स्थिति के कारण विश्वास शराब के नशे में देर रात घर आने लगा । इससे इन दोनों के वैवाहिक जीवन में अस्थिरता मच गई ।

'काजवे' की अनू ने हेमंत के साथ प्रेमविवाह किया है । लेकिन शादी के बाद हेमंत अपनी नैतिकता भूल जाता है , एक भ्रष्टाचारी बनकर दौलत कमाता है और यह बात अनू को पसंद नहीं थी । इससे दोनों में झगड़े होते है और विचारों, तत्त्वों में समानता न होने के कारण इन दोनों के वैवाहिक जीवन में अस्थिरता मच जाती है ।

'काजवे' की लीला जो अनू के बचपन के दोस्त राघव की पत्नी है । राघव शादी नहीं करना चाहता था मगर माँ के जिद के कारण वह लीला से शादी करता है । लीला को वह ना चाहता है और ना ही उससे कुछ बोलता है । बेचारी लीला कुछ नहीं समझ पाती । इससे बाहर निकलने के लिए वह एक बच्चा चाहती है, लेकिन राघव उसके पास तक नहीं आता है । इससे लीला बहुत अकेली पड़ जाती है और इनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता मच जाती है । 'चित्र' की शशी एक

कर्तव्यनिष्ठ, महत्त्वाकांक्षी नारी है । वह उसके ससुर का बनाया कारोबार निभा रही थी । उसके ससुर एस्बीं और उनका बेटा विनोद इन दोनों के विचार कभी मेल नहीं खाते थे । इसी कारण ही शशी को अपनी सेक्रेटरी से बहु बनाया था ताकि वह एक होशियार, चालाक और उसमें कष्ट करने की वृत्ती को देखकर वह उनका कारोबार आगे ले जा सकती है । शादी के बाद होशियार शशी को नीचा देखने के लिए उसके पति दूसरी औरत को अपने पास रख लेते हैं, जिससे उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता आ जाती है ।

'परिघाबाहेर' की इरा एक कामकाजी और अपने कैरियर को उँचाई देना चाहने वाली औरत है । उसने पति जनार्दन को हमेशा हर स्थिति में साथ दिया था । बच्चों को अपना कैरियर बनाने के लिए सक्षम बनाया था । लेकिन तभी उसका तबादला प्रमोशन पर होता है । इरा इस समय को छोड़ना नहीं चाहती और नौकरी पर जाना चाहती है । तो जनार्दन अकेला ही पड़ जाता है । इरा के इस निर्णय के कारण उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता बन जाती है ।

'आकार' की सुचेता जो रेणु के कहने पर उसके ऑफिस में काम करती है । रेणु और अजय इन्होंने परदेस में कई साल वास्तव्य किया था । वहाँ ही सूचेता का पति रवी मिलता है । जो मस्तमौला जिंदगी जीनेवाला है और रोज एक नई लड़की के साथ दिखाई देता है । कभी-कभी वह मजाक में बीवी के लिए कहता है कि, ''सापानं कात टाकावी तसा मी एक बायको टाकून आलो आहे इकडे''[1] (सांप जिस तरह अपनी केंचुल उतारकर फेंकता है उसी तरह मैं अपनी पत्नी को छोड़कर इधर आया हूँ ।) उसका और सुचेता का प्रेमविवाह हुआ था । सुचेता एक सीधी-साधी, भोली लड़की है । जो रवी के घरवालों के कामों में ही उलझी रहती थी । रेणु ने उसे अपने ऑफिस में काम करने की सलाह दी । रवी के साथ परदेस जाने के सपने देखने वाली सुचेता वास्तविकता जान नहीं सकी थी । और ना ही रेणु उसे बता पा रही थी । झूठें वादोंपर भरोसा कर वह उसके विरह में यहाँ रह रही थी और वहाँ रवी मस्त मौला जिंदगी जी रहा था । इसी तरह सुचेता के जीवन में वैवाहिक अस्थिरता निर्माण होती है ।

तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्पष्ट हो जाता है कि, दोनों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण चित्रित हुआ मिलता है ।

---

1. सानिया, आकार, पृ. - 148

पद्‌माशा की कहानियों में नारी अपने घर को बचाए रखने का हर तरह से प्रयास करती है । लेकिन जब वह सहते-सहते थक जाती है तभी वह अकेले रहने का फैसला करती है । यह नारियाँ अपने पति पर या पिता पर निर्भर दिखाई देती है । इसी कारण जो पति कहता है उसे ही माननेवाली नारी यहाँ चित्रित हुई है । समाज से डरते हुए पति के स्वच्छंदता का स्वीकार करने के कारण ही उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता बनी रहती है ।

सानिया की कहानियों में नारी परिवार को महत्त्व देने वाली है लेकिन अपनी जिजीविषा बनाये रखनेवाली, हर हाल में समाज और परिवार में अपना स्थान बनाए रखने के लिए संघर्ष करनेवाली नारी, खटती हुई औरत को जब उसके परिवार में स्थान न मिलने का उसे जब एहसास होता है तभी पति-पत्नी संबंधों में दरारे आती हैं । यह बात सानिया की कहानियों द्‌वारा चित्रित होती है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता के अंतर्गत प्राप्त नारियों के विवाह के चित्रण को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होते हैं वह इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्पष्ट हो जाता है कि, दोनों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण द्रष्टव्य हैं ।
2. दोनों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि, वैवाहिक अस्थिरता के परिणाम नारी को ही सहने पड़ते हैं ।
3. दोनों की कहानियों में माता-पिता के वैवाहिक अस्थिरता के कारण बच्चों का जीवन बिखरा हुआ दिखाई देता है ।
4. दोनों की कहानियों में ज्यादातर नारियों को पति द्‌वारा प्यार न मिलने पर वैवाहिक अस्थिरता बनती है ।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों की नारियाँ अपने वैवाहिक जीवन में सिर्फ पति के कारण ही वैवाहिक अस्थिरता का सामना करती है ।

- सानिया की कहानियों में नारियों के कारण भी वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण चित्रित है ।

2. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ पति के व्यभिचार के कारण त्रस्त होने पर उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता बनती है ।

- सानिया की कहानियों की नारियों के व्यभिचार के कारण उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता मच जाती है ।

2.5 स्वतंत्र अस्तित्व की कामना :

हर एक व्यक्ति को अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की अपेक्षा होती है । लेकिन भारतीय परंपरा के अनुसार पुरुषप्रधान संस्कृति के कारण नारी को अपनी अलग पहचान बनाने के लिए महत् प्रयास करने पडते हैं । लेकिन फिर भी उसे समाज में पुरुषों से नीचे ही माना जाता है । इस बारे में, "1790 मध्ये ऑलिंच द गुंझ या लेखिकेने स्त्रियांच्या हक्कांचा जाहिरनामा प्रसिध्द करुन पुरुषांप्रमाणेच स्त्रीला ही एक स्वतंत्र व्यक्ति म्हणून सन्मानाने जगण्याचा हक्क असला पाहिजे अशी मागणी केली."[1] (1790 में ऑलिंच द गुंझ इस लेखिकाने स्त्रियों के हक्क का जाहिरनामा प्रसिद्ध करके पुरुषों के बराबर ही स्त्री कों भी एक स्वतंत्र व्यक्ति के रुप में सन्मान से जीने का हक होना ही चाहिए ऐसी मांग की थी ।)

सदियों से लेकर आज तक नारी को अपनी जिंदगी दूसरों के इशारों पर जीनी पड़ती है । इसे तोड़ने का प्रयास आज की नारी करना चाहती है लेकिन परंपरा और संस्कारों में जखड़ी नारी स्वतंत्र व्यक्तिमत्व को किस तरह उजागर करें ।

दीपा एक लेक्चरर है । उसका पति देवेन शादी जैसे बंधन से मुक्त होना चाहता है और इसीलिए उसे अकेला छोड़कर दिल्ली चला जाता है । दीपा इस सदमें से बाहर निकलने के लिए अपने मित्र कुणाल पर ज्यादा ही निर्भर रहने लगती है । वह भी उसके यहाँ आते रहते हैं और उनकी आदत अब उसके नन्हें बेटे बाबुल को भी हो जाती है । एक दिन वह उन्हें शहर जाने का निमंत्रण देते हैं, दीपा भी तैयार होती है । लेकिन जब वे दोनों शहर जाते हैं तब दीपा बहुत बीमार हो जाती है । वहाँ कुणाल दिन भर अपने कामों में व्यस्त रहते हैं । उन्हें दीपा पर ध्यान ही देने का वक्त नहीं मिलता है । इससे दीपा को बहुत दुःख होता है, और वह वहाँ से वापस आती है । उसे लगता है, "अपेक्षा ही गलत है । अपेक्षा न करो तो सब ठीक । सबके साथ ठीक है । चाहे देवेन हो, चाहे

1. सं. डॉ. मनोहर जाधर, समीक्षेतील नव्या संकल्पना, पृ. - 125

कुणाल या कोई भी भाई, दोस्त, दूसरों की सुविधा के अनुसार संबंध निबाहो, तभी वह निभ सकता है, नहीं तो स्र्फि टूटना ही टूटना है, और हृदय भी क्या चीज है, कितनी बार टूटता हैं ।''[1] इस स्थिति में दीपा अपने स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानती है और अकेले रहने का निश्चय करती है ।

'कहानी और रिर्पोर्ताज के बीच' की नायिका को एज्युकेशन वाले कॉलेज में पढ़ना चाहती है, लेकिन लड़कों के कॉलेज में पढ़ने की इच्छा दर्शानेवाली लड़की कितने मुक्त विचारों की है ऐसा सोचकर उसे व्युमेन्स होस्टेल में प्रवेश नहीं मिलता है । लेकिन अन्य लड़कियों से अलग हटकर उसकी पढ़ने की जिद उसके स्वतंत्र अस्तित्व को ही उजागर करती है ।

'चांद पीला क्यों है ? की मोहिनी जब जवान होती है तो उसे यहाँ, वहाँ जाने, के लिए, बाजार में मनपसंद घुमने के लिए पाबंदी लगती है । उसे इस बंधनों के कारण दूसरोंपर बहुत गुस्सा आता है । ''वह बाजार से लौटती तो अपना असंतोष और झुँझलाहट वह भाइयों, भतिजों पर, चौके में बर्तनोंपर उतारती - किंतु लाख अफरातफरी और आपाधापि के बावजूद उसे कभी अकेले बाजार जाने की अनुमति नहीं मिली ।''[2] मोहिनी बिना वजह लादे गए बंधनों के कारण अपने स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करती हुई दिखाई देती है ।

'उदास गझल सी एक शाम की' रानी अपने प्यार में धोखा खाती है और इस सदमें से पागल बन जाती है । इसके कारण वह अपने जिंदगी से वीरक्त होना चाहती है । उसकी शादी होती है लेकिन वह शादी को सँभाल नहीं पाती । बाद में जब रानी की आधी जिंदगी ऐसे ही विरह में कटती है, तब उसका प्यार विरेश उसके जिंदगी में वापस आकर प्रायश्चित करना चाहता है । वह विरेश के इस प्रस्ताव को ठुकराती है । जो बित गया वह भूलना चाहती है । इस एहसास से ही उसने पाया कि, उसकी भी इच्छा मुस्कुराने की होती है, मीठी बातें करने की होती है, प्यार करने की होती है । वह अपने लिए नया दोस्त चूनना चाहती है । स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती है, ऐसा चित्रित होता है ।

'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता एक जानीमानी पत्रकार थी । लेकिन जब भुवन उसकी जिंदगी में आता है तब वह उसके प्यार में अंधी बन जाती है । वह भुवन को उसके बच्चों सहित अपनाती है, और अपना कैरियर छोड़के भुवन के ही इशारों पर चलती रहती है । लेकिन सब कुछ

---

1. डॉ. पद्माशा झा, बर्फ, पृ. - 16
2. डॉ. पद्माशा झा, चांद पीला क्यों है, पृ. - 22

न्योंछावर करने के बावजूद भी भुवन जो दिखते थे वह थे नहीं । उसका असली स्वभाव बाद में समझ में आने लगा और उसे सुजाता सह ना सकी । वह अपने अस्तित्व को ढुँढ़ने लगती है । भुवन से अलग रहकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए रखने की कामना करती हुई चित्रित होती है ।

'डॉग फ्लावर' की नायिका जहाँ रहती थी उसी होस्टेल में एक लड़की थी, जो इसे बिल्कुल पसंद नहीं थी । ''उसका बेबाक अश्लील ठहाके लगाकर हँसना, लड़को के साथ हमेशा रहना, शराब पीना इसे बिलकूल पसंद नहीं था । एक ही होस्टेल में रहने के कारण उसका सामना आते जाते इसे करना पड़ता था । उसे देखते ही इसके होंठ न जाने किस वितृष्णा या घृणा से सिकुड़ जाते थे फिर भी जब वह गुजर रही होती मैं पीछे से कसे हुए जीन्स में उसके भारी नितम्बों को छुप कर देखती । सब मिला-जुला वह एक ऐसी घृणा उत्पन्न करती उसमें खिंचाव भी होता''[1] उस लड़की की स्वच्छंदता देखकर कहानी की नायिका भी अपना भी अलग स्वतंत्र अस्तित्व रखने की कामना करती हुई चित्रित हुई दिखाई देती है ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता विनय के साथ प्रेमविवाह करती है, लेकिन यह विवाह विनय के माता-पिता को घाटे का सौदा लगता है और इसी कारण उनमें झगड़े होने लगते हैं, और इसका अंत तलाक मांगने पर ही होता है । फिर भी सुस्मिता को आशा थी की विनय वापस आएगा, वह उससे एक नन्हा विनय माँग लेगी । लेकिन जब विनय तलाक के लिए नोटिस भिजवाता है तब विनय और उसके घरवालों की मानसिकता को देखकर सुस्मिता निश्चय करती है कि अब कोई भी दोस्त चुनकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाऊँगी । अब दुष्यन्त से भरत नहीं मांगेगी, तलाक ले लेगी ।''[2] इस तरह सुस्मिता पतिद्वारा तलाक मांगने पर भी वह बिखरती नहीं बल्कि उसके विरोध में अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाने की कामना करती है ।

'गर्म बिस्तर' की नीमा एक शादीशुदा औरत है । लेकिन वह पति के जुल्मों के कारण तंग हो गई है, फिर परिवार को बचाने के कारण वह उसकी हरकते नजरअंदाज करती रहती हैं । लेकिन जब वह दूसरी औरत को ले आता है तो वह इस बात को सह नहीं सकती । उससे झगड़ा करती है । फिर वह उसे मार-पीट कर घर सें बाहर निकालता है । आगे वह एक पंडित के घर पनाह लेती है । उसी की बनकर रहती है । समाज और घरवालों की नजर में वह कुल्टा बन जाती है । फिर भी वह उन्हीं के घर में रहते हुए अपने स्वतंत्र अस्तित्व रखने का प्रयत्न करती है ।

---

1. डॉ. पद्माशा झा, डॉग फ्लावर, पृ. - 59
2. डॉ. पद्माशा झा, छोटे शहर की शकुन्तला, पृ. 68

इस तरह डॉ. पद्माशा की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करनेवाली नारियों का चित्रण दृष्टिगोचर होता है ।

सानिया की कहानियों मे भी स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करनेवाली नारी का चित्रण दिखाई देता है । उनकी 'परिमाण' की देवकी एक घरेलू औरत है, परिवार के प्रति उसका जो भी कर्तव्य बनता है उसे उसने बेखुबी निभाया है । लेकिन वह अपनी निजी जिंदगी में घरवालों की दखल पसंद नहीं करती । वह बचपन से ही उसके पिताजी के दोस्त के बेटे कैलास से प्यार करती थी लेकिन कैलास फिल्मों में काम करने हेतु भाग जाने के कारण वश उसका विवाह उससे नहीं हो पाता । लेकिन बाद में उसके संबंध कैलास से आते रहते है । उसकी शादी सुखदेव से होती है और उसके बच्चें भी पैदा होते हैं । फिर भी वह अपना निजी जीवन स्वच्छंदता से जीती हुई दिखाई देती है ।

'स्पर्श' की सुचित्रा अपने पति और बच्चों के लिए दिन-रात खटती है । लेकिन उसकी भावनाओं की कद्र न पति करता है न बच्चे । पति की बीमारी के दौरान अस्पताल में डॉ. विक्रम उसकी तारीफ करता है जिससे सुचित्रा अपने स्वतंत्र अस्तित्व के बारे में विचार करने लगती है । ''स्वत:चा असा काही खाजगी विचारच नाही, जो आपण खास म्हणून कुणी इतरांनी समजून घ्यावा ।''[1] (खुद का ऐसा कोई व्यक्तिगत विचारही नहीं, जो हम कुछ खास है, इसलिए कोई गैर हमें समझ लेगा ?)

'एक पाऊल पुढे' की ऊर्मिला एक आर्किटेक्ट है । लेकिन विश्वास के फर्म में काम करते -करते वह उसकी पत्नी हो गई और उसके परिवार को संभालने लगी । उसको ध्यान नहीं रहता की वह एक इंजिनियर भी है । लेकिन बहुत दिनों बाद जब उसके पति का कारोबार घाटे में जा रहा था तब उसे संभालने की चेतना उसकी बहू प्राची उसे देती है । तब ऊर्मिला में एक आत्मविश्वास पैदा होता है जो उसे अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की प्रेरणा देती है ।

'स्वरुप' की रेवती एक कर्तबगार, बहुत होशियार, कामकाजी नारी है । रेवती और उसका पति निरंजन दोनों में बहुत ही प्यार और सामंजस्य है । रेवती बहुत महत्वाकांक्षी होने के कारण ऑफीस में कामों में ही डुबी रहती है और पुरुषों से भी वह आगे थी । जब वह माँ बननेवाली थी तब उसकी लापरवाही से ही उसका गर्भपतन होता है । फिर उसे सिर्फ बच्चे के एहसास में ही माँ का

---

1. सानिया, स्पर्श, पृ. - 34

अलग स्वतंत्र अस्तित्व दिखाया । वह फिर से मां बनकर स्वतंत्र अस्तित्व को पाना चाहती है, ऐसा चित्रित होता है ।

'परिघाबाहेर' की इरा बहुत ही महत्वाकांक्षी औरत है । उसने हमेशा अपने परिवार और पति की इच्छा के अनुसार ही अपने आपको और उसकी नौकरी को भी सँभाला था। लेकिन जब सभी अपने-अपने जगह पर स्थित हो गये, तभी उसका प्रमोशन पर तबादला होता है और इस क्षण को वह छोड़ना नहीं चाहती थी । पति को अपना कारोभार सँभालने के लिए अकेला छोड़कर नौकरी पर चली जाती है । ऐसा चित्रित होता है ।

'आकार' की सुचेता का पति विदेश में पैसा कमाने के लिए जाता है । लेकिन उसे ना अपने पत्नी की याद आती है और ना घरवालों की । चैन से जीने की आदत ही उसे विदेश ले गई थी । वह वहाँ ऐश में जीता था और यहाँ सुचेता घर के कामकाज करती रहती थी । जितना भी करती थी वह कम ही था । बाद में वह रेणु के यहाँ नौकरी करने लगती है । ऑफिस का काम फिर घर का काम सुचेता के घरवाले इसमें बिल्कुल भी मदद नहीं करते और उसके पैसोंपर भी अपना हक जताने लगते हैं । यह बात जब उसके दिमाग में आती हैं, तब वह अपना अलग स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की कामना करती हुई चित्रित होती है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माश तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि, दोनों की कहानियों में 'स्वतंत्र' अस्तित्व की कामना करनेवाली नारी का चित्रण चित्रित है ।

पद्माश की कहानियों में नारी अपने अस्तित्व को बनाने की कामना करती है, अस्तित्व के लिए घुटन में जीती हुई दिखाई देती है । स्वतंत्रता के लिए झगड़ती हुई दिखाई देती है ।

सानिया की कहानियों में भी नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करती दिखाई देती है । इन काहनियों में नारी स्वतंत्र अस्तित्व की कामना तो करती ही है और अलग अस्तित्व बनाती भी है ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व की कामना इस संदर्भ के अंतर्गत प्राप्त नारियों के चित्रण को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होतें हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा और सानिया की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की कामना रखनेवाली नारी चित्रित होती है ।
2. दोनों की कहानियों मे नारी स्वच्छंदता के लिए स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करती हुई चित्रित होती है ।
3. दोनों की कहानियों में नारी स्वतंत्र अस्तित्व के लिए अपना परिवार भी छोड़ने के लिए मजबूर होती है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की काहानियों की नारियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए विद्रोही नहीं दिखाई देती ।

- बल्की इसकी तुलना में सानिया की कहानियों की नारियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए विद्रोही रुप में चित्रित दिखाई देती,है ।

2.6 अंतरजातीय प्रेमविवाह :

प्राचीन काल में क्षत्रियों में अंतरजातीय विवाह की प्रथा प्रचलित थी । राजाओं के अंतपुर अनेक जातियों की रानियों से भरे रहते थे । युद्ध में शत्रु प्रदेश से अनेक कन्याओं का अपहरण कर उनके साथ विवाह किए जाते थे । मध्य और आधुनिक युग में जाति के बंधन अधिक कड़े हो गए । सनातन धर्मी एवं रुढ़िवादी लोग अंतरजातीय विवाह के प्रति तिरस्कार से देखते रहे है । साथ ही अंतरजातीय विवाहोत्पन्न संतान के साथ विवाह संबंध भी स्थापित नहीं किए जाते है । हिंदू धर्म में अनेक उपजातियाँ है । आधुनिक शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव आदि कई कारणों से अंतरजातीय विवाहों की संख्या बढ़ने लगी है । डॉ. शील प्रभा वर्मा के अनुसार ''आधुनिक युग में अंतरजातीय विवाहों का प्रचलन बढ़ चुका है । इसका कारण पाश्चात्य शिक्षा, सहशिक्षा, समानता की धारणा, राष्ट्रीय आंदोलन, वैज्ञानिक शिक्षा, औद्योगीकरण और नागर संस्कृति, महिला आंदोलन, पक्ष और आर्य समाज के प्रभाव तथा वर मूल्य प्रथा का कटू रुप आदि है ।''[1] आज स्त्री-पुरुष संबंधों में

1. डॉ. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ. - 57

अधिक सान्निध्यता बढ़ने के कारण प्रेमविवाह बढ़ने लगे हैं । प्रेम बंधन के कारण युवा पीढ़ी सामाजिक बंधन ठुकराकर अंतरजातीय विवाह करने का साहस करती दिखाई देती हैं ।

पद्‌माशा की कहानियों में भी अंतरजातीय विवाह का चित्रण दिखाई देता हैं । उनकी 'खानाबदोश रिश्ते' की सुजाता जो एक पत्रकार है और पत्रकारिता करते-करते विवाह की बात माँ के कितने समझाने के बाद भी वह टालती रहती हैं । वह दिल्ली की रहनेवाली और वहाँ ही ''मॉरनिंग न्यूज'' के लिए काम करती थी । इसी क्षेत्र में उसे भुवन मिले जो एक प्रकाशन के मालिक थे । वहाँ से ही दोनों में प्यार का सिलसिला शुरु हुआ । वे सीतापुर के रहने वाले और यह दिल्ली की फिर भी दोनों ने अंतरजातीय विवाह कर लिया ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता और विनय दोनों एक ही क्लास में पढ़ते थे । फिर जब कॉलेज खत्म होने का समय आ गया तभी एक दिन विनय ने सुशा से पुछा कि, ''सुस्मिता जी ! मैं आप से विवाह करना चाहता हूँ....''[1] तब सुशाने भी उसे पसंद किया और घरवालों के विरोध के बावजूद उन दोनों ने विवाह कर लिया ।

सानिया की 'क्षितिज' की यशोधरा परदेस में पढ़ने के लिए जाती है और वहाँ उसकी पहचान केविन नाम के अमेरिकन ख्रिश्चन लड़के से होती है । वह घरमें बिना पूछे ही उसके साथ शादी करती है और अमेरिका चली जाती हैं । उसके घरवाले उसकी इस शादी से बहुत ही नाराज हो जाते हैं ।

'एक पाऊल पुढे !' की ऊर्मिला आर्किटेक्ट थी और इसी कारण वह विश्वास के फर्म में नौकरी पाने हेतु गई थी । लेकिन उसको नौकरी नहीं मिल पाएगी ऐसे कहा गया तब वह सीधे पूछती है कि नौकरी क्यों नहीं मिल सकती ? फिर विश्वासने उसका आत्मविश्वास और महत्वाकांक्षा को देखकर नौकरी दे दी और फिर शादी के लिए भी पूछा । ऊर्मिला को बहुत दिक्कते आई घरवालों कों बताने में, उनके सवालों के जवाब देने पड़े । अनेक दिक्कतों के बाद भी उन दोनों की शादी हो गई ।

'स्वरुप' की रेवती एक बहुत महत्वाकांक्षी, होशियार नारी है । उसने अपना कैरियर अपने मेहनत और लगन से बनाया था । निरंजन से उसकी जब पहचान हुई तब अलग क्षेत्र, अलग जाती

1. डॉ. पद्‌माशा झा, छोटे शहर की शकुन्तला. पृ. - 65

और निरंजन के माता-पिता भी नहीं थे, तब भी उसने अपने माता-पिता से बताकर निरंजन के साथ अंतरजातीय विवाह किया ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्‌माशा और सानिया दोनों के कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह बात द्रष्टव्य होती है कि दोनों की कहानियों में अंतरजातीय विवाह करनेवाली नारियाँ दिखाई देती हैं ।

दोनों की कहानियों की नारियों ने अंतरजातीय विवाह करते वक्त घरवालों का, समाज में उठनेवाले सवालों का सामना करके विवाह किया हुआ दिखाई देता है ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में अंतरजातीय विवाह को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होता हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा लिखित 'छोटे शहर की शकुन्तला' और सानिया लिखित 'परिमाण' में संकलित कहानियों में अंतरजातीय विवाह का चित्रण हैं ।
2. दोनों की कहानियों में अंतरजातीय विवाह को घरवालों से और समाज से भी विरोध हुआ है, साथ ही दोनों की कहानियों में घरवालों ने ही अंतरजातीय विवाह को संम्मति देने का चित्रण हैं ।
3. दोनों की कहानियों में जितने भी अंतरजातीय विवाह हुए है वह नारियाँ दूसरों पर निर्भर नहीं हैं यह दिखाई देता हैं ।

वैषम्य :

1. सानिया की कहानी में अंतरदेशीय अंतरजातीय विवाह का चित्रण मिलता है ।

\- पद्‌माशा की कहानियों में अंतरजातीय विवाह का ही वर्णन मिलता है ।

14808

A

2.7 धन की लालसा :

वर्तमान युग में औद्योगीक विकास, भौतिक सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षण, पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, सुविधा प्राप्ति की अति महत्वाकांक्षा आदि के कारण अर्थ-प्राप्ति ही मनुष्य के जीवन का चरम-लक्ष्य बनी है । अर्थ-पूजक मनुष्य ने अर्थ का दासत्व स्वीकार करके सभी नैतिक मूल्यों को तोड़ना प्रारंभ किया है । समाज में सम्मान एवं प्रतिष्ठा की कसौटी मानव-मूल्य न होकर 'अर्थ-मूल्य' हो गई है । इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य उसके पीछे छाती फूटने तक दौड़ रहा है । धन-लालसा एक ऐसा नशा है जो एक बार सिर पर सवार होता है तो उतर ही नहीं पाता । हमारे सभी सामाजिक और पारिवारिक संबंधों पर भी धन की अतिरिक्त चाह हावी होकर संबंधों को खोखला बनाती है । राजनीतिक, शैक्षिक, प्रशासनिक, न्याय-तंत्र सभी क्षेत्रों में यह 'धन का विषधर' फन फैलाकर बैठा है, जिसने इन सभी क्षेत्रों को अपने गरल से विषाक्त बना दिया है । इस संबंध में डॉ. ममता का कथन है, ''इस अर्थ-प्रधान युग में आर्थिक-मूल्य पारिवारिक, सामाजिक,राजनीतिक सभी संदर्भों में अति विकसित होते दिखाई दे रहें है ।''[1] धन की अतिरिक्त लालसा के कारण दांपत्य-संबंध में दररे उत्पन्न हो रही है । अन्य क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का विघटन होकर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी, धोखेबाजी जैसी, समस्याएँ पैदा होती है । धन की लालसा के कारण ही बेकसुरों की जान जा रही है । यही धन की लालसा समाज में इस तरह फैली है कि उसे निकालना मुश्किल हो जाता है ।

डॉ. पद्माशा ने अपनी कहानियों द्वारा आदमी धन के पीछे किस कदर भागता है इसका चित्रण किया है ।

'चांद पीला क्यों हैं ?' का जी. जे. जो मोहिनी का पति है । वह सुंदर है और उसका किसी शालिनी नाम के डॉक्टर और दिखने में सुंदर औरत के साथ संबंध है, फिर भी वह मोहिनी जैसी सांवली लड़की से विवाह करता है । महज इसलिए कि वह एम्.ए. पास है और नौकरी करके उसका आर्थिक स्तर बढ़ा सकती है । इस तरह सिर्फ अपना आर्थिक स्तर बनाने हेतु, समाज में अपना उच्च स्थान दिखाने के लिए धन की लालसा के कारण ही जी. जे. मोहिनी के साथ शादी करता है ।

---

1. डॉ. ममता शुक्ल, मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. - 114

'उन्हें एलर्जी हैं !'' के वे शुरु में छोटे-मोटे नेता थे । बाद में बहुत बड़े हो गये, चुनाव से पहले विनम्र भाव से मिलते थे - बोलते भी बहुत कम थे । पार्टी के दफ्तर में वे हमेशा दूसरों का कहा सुनते थे । लेकिन जब वह चुनाव जीतकर बहुत बड़े नेता बन गए तब उनसे तो मिलना भी मुश्किल हो गया । नेताजी से मिलने लेखिका फूल लेकर गई थी । वह जाते ही मालूम हुआ की नेता को फूलों से एलर्जी है जब की उन्हें तो फूलों के बारे में काफी जानकारी थी । उन्हें मिलने का मौंका नहीं मिला तो नेताइनजी से मुलाखत हो जाती है । वह फोन पर साड़ियों के ऑर्डर देने में व्यस्त थी । जब लेखिका अपना काम उसे बता ही रही थी तभी उनको सुनने से पहले ही नेताइनजी ने अपने पी.ए. से कहा, ''भाई इनके काम आप ही सुन लिया करो ! मैने दुनिया का ठेका नहीं ले रखा हैं ।''[1] इस तरह जब आदमी के पास धन और सत्ता आती है तब आदमी और अपना सामाजिक दायित्व तथा रिश्ते-नाते भुल जाता हैं ।

'रोज-रोज' की सुरजी के पति ने गेहू का खेत मालिक से तीसरे साल बटाई पर लिया था । ''हर साल वह खुद कितनी लगन से बीज डोभती है, केरौनी करती है, पोखर में लगाकर करींन से सींचती है... मगर उसके घर की कोठी तक अनाज कभी न पहुँचा, खलिहान से ही अनाज रातों-रात न जाने कहाँ बिला जाता है ।''[2] सुरजी को लगता है कि वह मादा कौवा की तरह कोयल के बच्चे को अपना बच्चा समझकर पालती है । अंखफोड होते ही कोयल का बच्चा भाग जाता है और वह सूने घोंसले की तरफ ताकती रह जाती है । याने मालिक लोगों के लालसा के कारण जो गरीब मजदूर होते हैं वे मात्र मेहनत करते रहते हैं और उनके हाथ में कुछ भी नहीं मिलता । वह अपने बच्चों को एक वक्त की रोटी तक नहीं दे सकते । इसतरह यहाँ मालिक लोगों की धन लालसा को दर्शाया है ।

'छोटे शहर की शकुन्तला' की सुस्मिता विनय के साथ घरवालों के विरोध के बावजूद शादी करती है । लेकिन दोनों भी नौकरी करते थे फिर भी विनय के माता-पिता एवंम् विनय को भी यह शादी घाटे का सौदा लगने लगी और इसका अंत तलाक में हो गया । फिर विनय के लिए पैसेवाले बाप की बेटी देखना उसके माता-पिता ने शुरु किया । इस तरह आदमी की धन लालसा के कारण पति-पत्नि के रिश्ते में दरार आने का चित्रण यहाँ किया है ।

---

1. डॉ. पद्माशा झा, उन्हें एलर्जी है ।, पृ. - 30
2. डॉ. पद्माशा, रोज-रोज, पृ. - 32, 33

'अनुपमा' की अनुपमा अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी । वह अत्यंत कुशल और मेधावी थी । वह पढ़ना चाहती थी, शादी न चाहते हुए भी उसकी माँ के आगे उसका कुछ नहीं चला । अच्छे घर में एक इंजिनियर की बीवी बनकर अनुपमा नकद सामानों सहित वह विदा हो जाती है । लेकिन अनुपमा जब ससुराल जाती है, तब उसके साथ जो धन तथा सामान आता है इससे उसकी ननंद, सास, ससुर का लालच और भी बढ़ता है । छोटी-छोटी चिजों को लेकर उसे ताने दिए जाते हैं । उसे उसके पति संजय से भी जान बूझकर दूर रखा जाता है । बाद में धन लालसा के आगे अंधे हुए ननंद, सास और ससुर मौका पाकर अनुपमा को जला डालते हैं । धन की लालच के कारण सास-ससुर अपने बहू को भी जला डालने का चित्रण यहाँ मिलता है ।

सानिया की 'काजवे' की अनू का पति हेमंत पैसे लिए बगैर किसी का काम नहीं करता । इसी कारण उन दोनों में झगड़े होते है और अनू मायके आती है । मायके में उसका बचपन का दोस्त राघव उसे मिलता है । अनू को लगता था कि, हेमंत की लालसा के बारे में मायके वालों को कुछ नहीं पता होगा ! लेकिन ऐसी बाते छुपाए नहीं छुपती । जब अनू राघव से बाते करती है तभी उसे पता चलता है कि मायके तक यही बाते पहुँच गई है । वह डर जाती है और उसे पूछती है कि, यह बात उसके घर में भी पता है क्या ? तो वह कहता है, ''त्याने काही मोठासा फरक पडत नाही लोकांना अशा घटना ऐकायची सवयच असते. अमुक एखादा माणूस हात ओले केल्याशिवाय पेपर्स पुढे सरकवत नाही. किंवा इतके टक्के वाटा मागतो तरच काम होऊ देतो. यासारख्या चारित्र्याची आता लोकांना सवयच झाली आहे. पचनी पडले आहेत असे गुण.''[1] (उससे कुछ ज्यादा फर्क नहीं पड़ता । लोगों को ऐसी घटनाएँ सुनने की आदत होती है । हर आदमी हाथ गिले किए बिना पेपर्स को आगे नहीं जाने देता । या फिर इतने-इतने प्रतिशत हिस्सा माँगकर ही काम होने देता है । इस तरह के चारित्र्य की लोगों को आदत हो गई है । आदत हो गई है ऐसे गुणों की ।) इस तरह ब्रष्ट आचरन द्वारा धन कमाने का चित्रण 'काजवे' इस कहानी में मिलता है ।

'चित्र' की शशी बहुत ही होशीयार और महत्वाकांक्षी औरत थी । इसिलिए उसके गुणों को परखकर एस्बी नामक बॉस ने उसे अपनी सेक्रेटरी से बहू बनाया था, ताकि वह उसका कारोबार सँभाले, आगे बढ़ा लें । एस्बीं बहुत ही लालची आदमी है । जिसने बहुत ही निर्दयता से लोगों को तो लूटा ही लेकिन अपने भाईयों को भी नहीं छोड़ा । इस तरह धन के लालच के लिए सेक्रेटरी को

---

1. सानिया, काजवे, पृ. 85

बहू बनाना, लोगों को लूटना यहाँ तक की एस्बी ने अपने भाईयों तक न छोड़ने का चित्रण प्रस्तुत कहानी में मिलता है ।

'आकार' का रवी ऐयाशी और अपने स्वार्थ के लिए जीनेवाला युवक है । जो अच्छी नौकरी छोड़कर और अपनी पत्नी को अकेला छोड़कर पैसा कमाने परदेस चला जाता है । वह कमायेगा और वहाँ से डॉलर घर भेजेगा इस आशा में उसके घरवाले उसके बारे में बड़ी-बड़ी बाते करते रहते है और यहाँ उसकी पत्नी रेणु घर का सारा काम सँभालकर नौकरी करती है । इसतरह अपनी ऐयाशी के लिए धन कमाने वाली पत्नी तथा घरवालों को छोड़कर विदेश जाने का चित्रण प्रस्तुत कहानी में मिलता है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा और सानिया की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि, दोनों की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं ।

हर एक आदमी किसी ना किसी प्रकार की लालसा रखता है । लेकिन जब यही लालसा दूसरों के लिए तकलिफमंद होती है तब वह अन्याय का रुप धारण करती है । आज दुनिया धन के पर चलती है, और उसे पाने के लिए किसी भी हद तक पहुँचती भी है यह यहाँ दोनों की कहानियों से दिखाई देता है ।

पद्माशा की कहानियों में नारी धन की लालसा रखने वाले लोगों का विरोध नहीं करती बल्कि वह अन्याय सहती दिखाई देती है । नारी की सहनशक्ति के कारण ही दहेज बलि जैसी घटनाएँ उनकी कहानियों में द्रष्टव्य होती है ।

सानिया की कहानियों में समाज में धन लालसा रखनेवाले लोग होने का चित्रण दिखाई देता है । लेकिन नारी इसका विरोध करती दिखाई देती हैं ।

विवेच्य कहानीकारों के कहानियों में धन की लालसा को लेकर जो साम्य वैषम्य परिलक्षित हुआ हैं वे इस प्रकार है -

साम्य :

1. दोनों की कहानियों में धन की लालसा रखनेवाले लोगों का चित्रण परिलक्षित होता हैं ।
2. दोनों की कहानियों में धन की लालसा के कारण नारियों पर अन्याय होता दिखाई देता हैं ।
3. दोनों की कहानियों में धन की लालसा के कारण भ्रष्ट्राचार भी द्रष्टव्य होता हैं ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता है ।
- सानिया की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण अत्यल्प दिखाई देता है ।
2. पद्माशा की कहानियों में धन की लालसा के कारण बहू को जलाने का चित्रण परिलक्षित होता है ।
- सानिया की कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं दिखाई देता ।
3. पद्माशा जी की कहानियों की नारियाँ धन की लालसा के कारण उन पर हो रहे अन्याय से पीड़ित है, उसे सहती रहती दिखाई देती हैं ।
- सानिया की कहानियों की नारियाँ अन्याय को सहती तो है, लैकिन एक मर्यादा तक सहती है बाद में विरोध करती दिखाई देती हैं ।

2.8 अवैध यौन-संबंध :

भारतीय संस्कृति में यौन-संबंधो को धर्म द्वारा नियंत्रित करने के लिए स्त्री-पुरुष के विवाह की व्यवस्था की गयी है । पति-पत्नी दोनों एक-दुसरे से जुड़े हुए है लेकिन कुछ परिस्थितियों में एक दूसरें के साथ रहते हुए भी पति पत्नी किसी अन्य स्त्री पुरुष से यौन संबंध रखते हैं तो उसे अवैध यौन संवंध कहा जाता है । ऐसे संबंधों को भारतीय समाज स्वीकारता नहीं । रोहिणी अग्रवाल के मतानुसार -, ''दांपत्येत्तर संबंधों को प्राय सीधे चरित्र हनन के साथ जोड़ा जाता है ।''[1] चरित्रहीन स्त्री पुरुषों को समाज मान, सम्मान, प्रतिष्ठा नहीं मिलती ।

अवैध यौन-संबंधों से दांपत्य जीवन केवल तनावपूर्ण ही नहीं बनता बल्कि विघटन की स्थिति में भी पहुँच जाता है । इसके कई कारण है, पौरुष्यहीन पति, यौन असंतुष्टि, यौनआसक्ति,

1. डॉ. रोहिणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों में कामकाजी महिला, पृ. - 159

UNI... LIBRARY

अतृप्त वासना, बेमेल विवाह, पारस्परिक कलह, पति-पत्नी की उदासीनता, विवशता, विवाह विच्छेद, संतानोत्पत्ति का अभाव आदि । अत: मानसिक एवंम् शारीरिक रुप से अतृप्त पति-पत्नी अवैध यौन संबंध रखते हैं, जिससे दांपत्य जीवन कष्टप्रद बनता हैं ।

पद्‌माशा की 'बर्फ' में दीपा का पति देवेन उसे छोड़कर दिल्ली चला जाता है । लेकिन वह कभी-कभी वापस आता है । यहाँ दोपा अकेली होने के कारण उसके कुणाल के साथ संबंध बन जाते हैं, जिसके आने पर उसका बेटा बाबुल भी खुष होता है । वह एक बार कुणाल के साथ शहर जाकर होटल में ठहरती है, इससे यह साबित होता है कि, उसके कुणाल के साथ अवैध-यौन संबंध थे ।

'डॉग-फ्लावर' की नायिका जिस होस्टेल में रहती थी उसी होस्टेल में एक लड़की रहती है । जो हमेशा रात को देर से लौटती है और रोज एक नया लड़का साथ होता है । कभी उसने शराब पी होती है तो कभी सिगरेट पीती नजर आती है । हमेशा लड़को के साथ घुमती रहती है । इस तरह उस लड़की के अनेक लड़कों के साथ अवैध यौन संबंध होने का चित्रण है ।

'चांद पीला क्यों है ?' की मोहिनी का पति जी. जे. का शालिनी नाम के औरत के साथ अवैध यौन संबंध होने का चित्रण मिलता है ।

'गर्म बिस्तर' की नीमा का पति एक शराबी और आवारा किस्म का आदमी है । वह नीमा को हमेशा शराब पीकर मारता पिटता है । एक दिन वह दूसरी औरत को ही घर में ले आता है । इसका विरोध वह करती है तो वह उसे ही घरसे बाहर निकालता है । फिर वह एक पंडित जी के घर में पनाह लेती है और उन्हीं की बनके रहती है । यहाँ नीमा और उसका पति परेश दोनों एक दूसरे की गलती के कारण विवाह बाहय अवैध यौन संबंध रखने का चित्रण मिलता है ।

सानिया की 'परिमाण' की देवकी कैलास से प्यार करती थी । लेकिन कैलास के घर छोड़कर चले जाने के कारण उसकी शादी सुखदेव से होती है । वह कैलास से कभी कह नहीं पाती की वह उससे प्यार करती है । लेकिन शादी के बाद कैलास और देवकी के संबंध फिर बनते हैं । सुखदेव को शक भी होता है कि उसकी बेटी रितू शायद कैलास की ही बेटी है और तो और देवकी के अनेक लोगों के साथ संबंध है यह भी सुखदेव को शक था । लेकिन देवकी ने हर बात को सोच समझकर बांधकर रखा था । वह इस बारे में कैलास को एक बार कहती भी है कि, ''आता मुलं मोठी होत आली वाटतं की, ही आतली तहान शरीराची, मनाची संपून जायला हवी. म्हणजे

थोडी शांती मिळेल; पण सवयच झालो आहे कामाची व्हावी तशीच. अनेक ठिकाणी लक्ष जातं.''[1] (अब बच्चें भी बड़े हो गये हैं । लगता है कि, शरीर के अंदर की यह प्यास, मन से ही खत्म होनी चाहिए । जिससे थोडी शांती मिलेगी, लेकिन आदत सी हो गई है । जैसे काम करने की होती है, अनेक जगह पर ध्यान चला जाता है ।) इसतरह देवकी यौन असंतुष्टि के कारण ही अनेक लोगों के साथ अवैध यौन संबंध रखती है ।

'चित्र' की शशी का पति विनोद ने अपना पुरुषार्थ सिद्ध करने के हेतु दूसरी स्त्री के साथ यौन संबंध स्थापित करता है । क्योंकि शशी एक महत्वाकांक्षी, अपने कारोबार को एक उंचाई पर ले जानेवाली औरत थी । अपनी पत्नी को नीचा दिखाने हेतु वह दूसरी औरत के साथ यौन संबंध रखता है । उसे लेकर अलग घर में रहने का चित्रण मिलता हैं ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि, दोनों कहानीकारों की कहानियों में अवैध यौन संबंध रखनेवाले पात्रों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है ।

पद्माशा और सानिया दोनों की कहानियों में स्त्री एवंम् पुरुष दोनों अवैध यौन संबंध रखते दिखाई देते हैं, यह चित्रण मिलता है । किसी की पत्नी बाहर संबंध रखती है तो किसी का पति अवैध यौन संबंध रखता है ।

पद्माशा की काहानियों की नारी किसी मजबूरी के कारण अवैध यौन संबंध रखती है । सानिया की कहानियों की नारी यौन असंतुष्टि के कारण संबंध रखती है ।

विवेच्य कहानिकारों की कहानियों में अवैध यौन संबंध के चित्रण को लेकर जो साम्य-वैषम्य दृष्टिगोचर होते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा और सानिया, दोनों की कहानियों में अवैध यौन संबंधो का चित्रण मिलता हैं ।
2. दोनों की कहानियों में विवाहित नारी या विवाहित पुरुष दोनों के अवैध यौन संबंध का चित्रण मिलता है ।

---

1. सानिया, परिमाण, पृ. - 17

3. दोनों की कहानियों में पुरुष नारी की आवाज को दबोच रखने के लिए और अपनी यौन अतृप्ति के कारण अवैध यौन संबंध रखता है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों में अवैध यौन संबंध रखनेवाले पात्रों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है ।

- सानिया की कहानियों में अवैध यौन संबंध रखनेवाले पात्रों का चित्रण अत्यल्प मात्रा में मिलता है ।

2. पद्माशा की कहानियों में कुँआरी लड़की द्वारा अनेक लड़कों के साथ अवैध यौन संबंध रखने का चित्रण मिलता है ।

- सानिया की कहानियों में इसका चित्रण नहीं है ।

3. पद्माशा की कहानियों में नारी किसी मजबूरी वश अवैध यौन संबंध रखती है ।

- सानिया की कहानियों की नारी खुद के यौन अतृप्ति के कारण अवैध यौन संबंध रखने का चित्रण मिलता है ।

2.9 राजनीतिक खोखलापन :

भारतीय जनता स्वतंत्रता के पश्चात् राजनेताओं से देश की प्रगति और जन-हित के कार्यों की अपेक्षा करती रही, परंतु राजनीतिक पतन निरंतर विक्राळ रुप धारण करता रहा है। आज सेवा, त्याग, तपस्या और बलिदान जैसे मूल्य पिछड़ गए हैं और अवसरवादीता ही कुशल राजनीति बन गई हैं । वोट पाने के लिए लोगों को बहला फुसलाना और जब नेता बनते हैं तब सामान्य लोगों की एलर्जी इन नेताओं कों होती हैं । वोट माँगने आया हुआ नेता पाँच साल बाद वोट माँगने के लिए ही आता है और जनता को बड़े-बड़े आश्वासन और प्रलोभन देता है । अत:लोग नाग से साँप भला इस नीति के अनुसार उन्हें चुनकर देते हैं ।

पद्माशा की कहानियों में भी राजनीति के खोखलेपन का चित्रण दिखाई देता है । उनकी 'उन्हें एलर्जी है' में वे शुरु में छोटे-मोठे नेता थे । चुनाव के पहले विनम्र भाव से मिलते थे । लेकिन जब चुनाव जीतकर बड़े नेता बन गये तब डॉ. साहिबा उन्हें मिलने जाती है । वहाँ पहुँचते ही पता चलता है कि, नेता को फूलों से एलर्जी है तो फुल आप बाहर ही रखकर जाए । यह सुनकर

डॉ. साहिबा को एकदम झटका सा लगता है । जिस आदमी को, फुलों पर की गई कविताओं से बहुत लगाव था उन्हें ही फुलों से ही एलर्जी होने लगी थी । बाद में जब नेता बाहर आ गए तभी भीड़ धक्के से तितर-बितर होने पर भी डॉ. साहिबा ने उन्हें नमस्ते किया । वे मुस्कराए लेकिन वह जापानी अंदाज में लगभग दौड़ते ही गाडी की तरफ चल दिए । बाद में उनका एक समझदार सहकारी भीड़ को संबोधित कर कह रहे थे, ''आप लोग भीड़ न जुटाएँ, उन्हें भीड़ से एलर्जी हैं, भीड़ देखते ही और शोर सुनते ही उनका रक्तचाप बढ़ जाता हैं, आपका कर्तव्य हैं, अपने नेता की सेहत का खयाल रखें ।''[1] डॉ. साहिबा सोचती रहती है तभी एक आदमी कहता है कि मंत्रीजी से मिलने से कोई फायदा नहीं । उन्हें तो जनता से एलर्जी हैं । इसलिए सारी पॉलिसी देवी जी ही तय करती हैं । जब डॉ. साहिबा देवीजी से मिलने जाती है तब वे किसी दुकान को फोन लगाकर जरीवाली साड़ियों के ऑर्डर दे रही थीं । बाद में डॉ. साहिबा का काम सुनते ही पी. ए. से कहा कि, ''भई इनके काम आप ही सुन लिया करो । मैंने दुनिया का ठेका नहीं ले रखा है ।''[2] डॉ. साहिबा को बाद में पता चलता है कि उन्हें सुंदर युवतियों से एलर्जी हैं । जनता को बड़े-बड़े सपने दिखाकर वोट पानेवाले, नेता बनकर जनता से दूर रहनेवाले, उनकी बात तक न सुननेवाले राजनेताओं का पर्दाफाश पद्माशाजी ने 'उन्हें एलर्जी है !' कहानी में किया है ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

पद्माशा झा की कहानियों में राजनीतिक खोखलेपन का चित्रण द्रष्टव्य होता है । सानिया की कहानियों में राजनीति का चित्रण ही नहीं मिलता ।

विवेच्य कहानिकारों की कहानियों में राजनीतिक खोखलेपन इस संदर्भ के अंतर्गत प्राप्त नारियों के चित्रण को लेकर जो साम्य-वैषम्य परिलक्षित होतें हैं वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में राजनीतिक खोखलेपन के चित्रण में कोई साम्य परिलक्षित नहीं होता ।

---

1. डॉ. पद्माशा झा, उन्हें एलर्जी हैं, पृ. - 29
2. वही, पृ. - 30

वैषम्य :

1. पद्माशा झा की 'उन्हें एलर्जी है !' कहानी राजनीतिक खोखलेपन का चित्रण दृष्टिगत है ।

- सानिया की कहानियों में राजनीतिका चित्रण ही नहीं मिलता ।

समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :

डॉ. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में प्रस्तुत विवेच्य कहानियों का कथ्य के अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष रुप में जो तथ्य सामने आये हैं, वे इस प्रकार हैं -

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण मिलता है । पद्माशा की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण समाज के हर वर्ग में से दिखाई देता हैं । यह नारी किसी न किसी के दबाव में रहनेवाली चित्रित होती है । सानिया की कहानियों की कामकाजी नारी सिर्फ उच्च और निम्न वर्ग में से दिखाई देती है और वह अपने आपको और अपने विचारों को स्वतंत्र रखनेवाली चित्रित होती है ।

दोनों की कहानियों में हालात से समझौता करनेवाली नारी का चित्रण भी मिलता हैं । पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी परिवार को बचाने के लिए जिंदगी से समझौता करनेवाली दिखाई देती हैं । वह अपने विचारों को न्याय नहीं देती और नारी का धर्म परिस्थिति से समझौता करना ही होता है, फिर उसे कैसी भी स्थिति का सामना क्यों ना करना पड़े; ऐसे मानकर चलनेवाली नारी परिलक्षित होती है । सानिया की कहानियों में नारी अपने दिल से समझौता करती दिखाई देती है । अपने विचारों को स्वतंत्र रुप से न्याय देती हुई दिखाई देती है । यह नारियाँ अपनी परिस्थिति का हल निकालने के लिए समझौता करनेवाली चित्रित होती हैं ।

दोनों की कहानियों में घुटन में जीनेवाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है । पद्माशा की कहानियों की नारियाँ पति को परमेश्वर मानकर उसकी हर गलती को नजर अंदाज कर देती है । परिवार के लिए अपना पूरा सहयोग देती है, चाहे उसके मन को तकलीफ, घुटन क्यों न मिले । उन्हें एहसास भी नहीं होता कि, वो क्यों और किसके लिए घुटन महसूस कर रही हैं । सानिया की कहानियों की नारियाँ अपने पैरों पर अपने दम पर खड़े रहने की काबीलियत रखती हैं । फिर भी परिवार को सुखी बनाना लक्ष्य मानती है । उच्च पद्स्थ होकर भी परिवारसे अपनापन न मिलने के कारण अंदर ही अंदर घुटती दिखाई देती है ।

दोनों की कहानियों में अंतरजातीय विवाह करनेवाले पात्र चित्रित होते है । दोनों की कहानियों की नारियों ने अंतरजातीय विवाह करते वक्त घरवालों का और समाज में उठते सवालोंका सामना करके विवाह किया हुआ दिखाई देता है । पद्‌माशा की कहानियों में अंतरजातीय विवाह का चित्रण चित्रित हैं । सानिया की कहानियों में मात्र अंतरजातीय विवाह ही नहीं तो अंतरदेशीय विवाह का चित्रण भी दिखाई देता है ।

दोनों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण चित्रित हुआ है । पद्‌माशा की कहानियों में नारी अपने घर को बचाये रखने का हर तरह से प्रयास करती है । लेकिन वह सहते-सहते थक जाती है, तभी वह अकेले रहने का फैस्ला करती है । यह नारियाँ अपने पति पर या पिता पर निर्भर दिखाई देती है और इसी कारण जो पति कहता है उसे ही माननेवाली नारी यहाँ चित्रित हुई है । समाज से डरते हुए पति के स्वच्छंदता का स्वीकार करने के कारण ही उनके वैवाहिक जीवन में अस्थिरता बनी रहती है । सानिया की कहानियों में नारी परिवार को महत्त्व देनेवाली है । लेकिन अपनी जिजीविषा बनाए रखनेवाली, हर हाल में समाज और परिवार में अपना स्थान बनाए रखने के लिए संघर्ष करनेवाली नारी का चित्रण दिखाई देता है । अपने पति और बच्चों के लिए खटती हुई औरत को जब उसे परिवार में स्थान न मिलता है तो उसका अहं जब जाग उठता है तभी पति-पत्नी संबंधों में दरारें आती है और इसीसे ही वैवाहिक अस्थिरता बनती हैं ।

दोनों की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण द्रष्टव्य होता है । पद्‌माशा की कहानियों में नारी धन की लालसा रखनेवाले लोगों का विरोध नहीं करती है, बल्की उनसे अन्याय सहती दिखाई देती है । नारी की सहनशक्ति के कारण ही दहेज बलि जैसी घटनाएँ उनकी कहानियों में द्रष्टव्य होती हैं । सानिया की कहानियों में समाज में धन के लोभी होने का चित्रण दिखाई देता है । लेकिन नारी इसका विरोध करती दिखाई देती है ।

दोनों की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करनेवाली नारी का चित्रण चित्रित है । पद्‌माशा की कहानियों में नारी अपने अस्तित्व को बनाने की कामना करती है, अस्तित्व के लिए घुटती दिखाई देती है । अलग स्वतंत्रता के लिए झगड़ती दिखाई देती है । लेकिन मन ही मन में स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करती चित्रित होती है । सानिया की कहानियों में नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की कामना तो करती ही है और अपना अलग स्वतंत्र अस्तित्व बनाती भी है, यह चित्रित है ।

दोनों की कहानियों में अवैध यौन संबंध का चित्रण मिलता है । पद्माशा की कहानियों की नारी किसी मजबूरी के कारण अवैध यौन संबंध रखती है । सानिया की कहानियों की नारी यौन असंतुष्टि के कारण यौन संबंध रखती चित्रित हुई है ।

पद्माशा की कहानियों में ही सिर्फ राजनीतिक खोखलेपन का चित्रण मिलता है । सानिया की कहानियों में इसका चित्रण ही नहीं मिलता ।

विवेच्य कहानीकारों की कहानियों में, विवेच्य कहानियों का कथ्य के अंतर्गत प्राप्त साम्य-वैषम्य इस प्रकार है -

साम्य :

1. दोनों की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण चित्रित हैं ।
2. पद्माशा और सानिया, की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी का चित्रण परिलक्षित होता है ।
3. पद्माशा और सानिया, की कहानियों में घुटन में जीनेवाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।
4. पद्माशा और सानिया की कहानियों में अंतरजातीय विवाह का चित्रण मिलता है ।
5. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्पष्ट हो जाता है कि दोनों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं ।
6. पद्माशा तथा सानिया, की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण परिलक्षित होता है ।
7. दोनों की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की कामना रखनेवाली नारी चित्रित होती है ।
8. दोनों की कहानियों में अवैध यौन संबंधों का चित्रण परिलक्षित होता है ।

वैषम्य :

1. डा. पद्माशा की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण समाज के हर वर्ग से जुड़ा हुआ है ।

- सानिया की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण सिर्फ उच्च वर्ग और मध्य वर्ग में ही चित्रित हुआ है ।

2. पद्माशा की कहानियों में नारी किसी न किसी के दबाव में रहने वाली चित्रित होती है ।

- सानिया की कहानियों में नारी अपने आपको स्वतंत्र रखनेवाली चित्रित हुई है ।

3. पद्माशा की कहानियों में चित्रित नारी दूसरों के लिए कामकाजी बनी है ।

- सानिया की कहानियों में नारी खुद की अलग पहचान बनाने के लिए मर्दों के बराबर काम करनेवाली चित्रित होती है ।

4. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी परिवार को बचाने के लिए जिंदगी से समझौता करती दिखाई देती है ।

- सानिया की कहानियों में नारी दिल से समझौता करती दिखाई देती है ।

5. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी अपने विचारों को न्याय नहीं देती ऐसा चित्रण द्रष्टव्य है ।

- सानिया की कहानियों में नारी अपने विचारों को न्याय देते परिलक्षित होती है ।

6. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी, नारी का धर्म परिस्थिति से समझौता करना है, यह मानकर ही समझौता करती हुई नारी परिलक्षित होती है ।

- सानिया की कहानियों में नारी आनेवाली परिस्थिति का हल निकालने के लिए समझौता करती चित्रित हुई है ।

7. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने पति को परमेश्वर मानकर उसकी हर गलती नजर अंदाज करके खुद ही घुटन में जीती दिखाई देती है ।

- सानिया की काहनियों की नारियाँ सही को सही और गलत को गलत माननेवाली चित्रित होती है ।

8. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने कैरियर को बनाने के लिए पारिवारिक सहयोग न मिलने के कारण घुटन में जीते दिखाई देती है ।

- सानिया की कहानियों के नारी पात्र अपने कैरियर में उच्च पदस्थ होकर भी परिवार में अपनापन न होने के कारण घुटन में जीती दिखाई देती है ।

9. पद्माशा की कहानियों में सिर्फ अंतरजातीय विवाह चित्रित हुआ है ।

- सानिया की कहानियों में अंतरदेशीय अंतरजातीय विवाह का चित्रण चित्रित है ।

10. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने वैवाहिक जीवन में सिर्फ पति के कारण ही वैवाहिक अस्थिरता का शिकार बनी हुई द्रष्टव्य होती है ।

- सानिया की कहानियों में नारियाँ अस्थिर मन के कारण वैवाहिक अस्थिरता का शिकार बनी परिलक्षित होती है ।

11. पद्माशा की कहानियों में धन की लालसा के कारण नारी को जलाने का चित्रण परिलक्षित होता है ।

- सानिया की कहानियों में इस प्रकार का चित्रण नहीं मिलता ।

12. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ धन की लालसा के कारण उन पर हो रहे अन्याय की पीड़ा को सहती हुई चित्रित होती है ।

- सानिया की कहानियों की नारियाँ अन्याय को मर्यादा तक सहकर बाद में विरोध करती चित्रित होती है ।

13. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ विद्रोही नहीं दिखाई देती ।

- बल्कि इसकी तुलना में सानिया की कहानियों की नारियाँ अपने अस्तित्व के लिए विद्रोह का रुप धारण करती परिलक्षित होती हैं ।

14. पद्माशा की कहानियों में अवैध यौन संबंध रखने वाली नारी का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है ।

- सानिया की कहानियों में इसका अत्यल्प चित्रण मिलता है ।

15. पद्माशा की कहानियों में नारी किसी मजबूरीवश अवैध-यौन संबंध रखती है ।

- सानिया की कहानियों की नारी खुद के यौन अतृप्ति के लिए यौन संबंध रखती है ।

16. पद्माशा की कहानियों में कुँआरी लड़की द्वारा अनेक लड़को के साथ अवैध यौन संबंध रखने का चित्रण हैं ।

- सानिया की कहानियों में इस का चित्रण ही नहीं है ।

17. पद्माशा की कहानियों में राजनीतिक खोखलेपन का चित्रण द्रष्टव्य होता है । प्रस्तुत पात्र के चित्रण में लेखक की प्रामणिकता और गहराई परिलक्षित होती है ।

- सानिया की कहानियों में राजनीति का चित्रण नहीं मिलता ।

****

UNIVERSITY